सारंगी

हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तक

1

© NCERT
not to be republished

QRickit
0122

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

2024-25

0122 – सारंगी
कक्षा 1 के लिए हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तक

ISBN 978-93-5292-423-3

प्रथम संस्करण
जून 2023 ज्येष्ठ 1945

पुनर्मुद्रण
मार्च 2024 चैत्र 1946

PD 500T SU

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2023

₹ 65.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशन प्रभाग में प्रकाशित तथा बी.एम. ऑफ़सेट प्रिंटर्स, डी–247/17, सेक्टर–63, नोएडा (उ.प्र.) द्वारा मुद्रित।

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फ़ोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रचारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशन की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन. सी. ई. आर. टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नई दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562708

108, 100 फ़ीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III स्टेज
बेंगलुरु 560 085 फ़ोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फ़ोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पानीहटी
कोलकाता 700 114 फ़ोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स
मालीगाँव
गुवाहाटी 781 021 फ़ोन : 0361-2676869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	:	*अनूप कुमार राजपूत*
मुख्य संपादक	:	*श्वेता उप्पल*
मुख्य उत्पादन अधिकारी	:	*अरुण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक (प्रभारी)	:	*अमिताभ कुमार*
संपादन सहायक	:	*ऋषिपाल सिंह*
सहायक उत्पादन अधिकारी	:	*दीपक जैसवाल*

आवरण, चित्रांकन एवं लेआउट
ग्रीन ट्री डिज़ाइनिंग स्टूडियो प्रा.लि.

© NCERT not to be republished

आमुख

भारत में बच्चों के सबसे प्रारंभिक वर्षों में उनके सर्वांगीण विकास को पोषित करने की एक समृद्ध परंपरा रही है। ये परंपराएँ परिवार, रिश्तेदार, समुदाय, समाज एवं देखभाल व सीखने के औपचारिक संस्थानों के लिए पूरक की भूमिका निभाती हैं। बच्चे के जीवन के पहले आठ वर्षों में, पीढ़ी-दर-पीढ़ी संचरित संस्कारों के विकास को समाहित करते इस समग्र दृष्टिकोण का उनके विकास, स्वास्थ्य, व्यवहार और उत्तरवर्ती वर्षों में संज्ञानात्मक क्षमताओं के प्रत्येक पक्ष पर आजीवन एक महत्वपूर्ण व सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

बच्चों के जीवनपर्यंत विकास में प्रारंभिक वर्षों के महत्व को ध्यान में रखते हुए, *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* (एन.ई.पी. 2020) ने 5 + 3 + 3 + 4 पाठ्यचर्या एवं शिक्षाशास्त्रीय संरचना की परिकल्पना की है जो पहले पाँच वर्षों (3–8 आयु वर्ग) पर समुचित ध्यान देती है, जिसे आधारभूत स्तर की संज्ञा दी गई है। कक्षा 1 व 2 भी आधारभूत स्तर का एक अभिन्न अंग हैं। तीन से छह वर्ष के बच्चों के समग्र विकास की आधारशिला के प्रथम चरण 'बालवाटिका' से आगे बढ़ते हुए व्यक्ति का आजीवन सीखना, सामाजिक एवं भावनात्मक व्यवहार और समग्र स्वास्थ्य इसी महत्वपूर्ण आधारभूत स्तर के अंतराल में प्राप्त अनुभवों पर निर्भर करता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति इस स्तर के लिए एक विशिष्ट राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा की संस्तुति करती है, जो न केवल आधारभूत स्तर पर उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करने में, अपितु विद्यालयी शिक्षा के अगले चरणों में इसकी गतिशीलता सुनिश्चित करने के लिए भी संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था का मार्ग प्रशस्त करने में सहायक होगी। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के अंतर्गत उल्लिखित सिद्धांतों और उद्देश्यों, तंत्रिका विज्ञान एवं प्रारंभिक बाल्यकाल शिक्षा सहित विभिन्न विषयों के अनुसंधान, व्यावहारिक अनुभव व संचरित ज्ञान तथा राष्ट्र की आकांक्षाओं व लक्ष्यों के आधार पर, आधारभूत स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.-एफ.एस.) का विकास किया गया जिसका विमोचन 20 अक्तूबर 2022 को किया गया था। तत्पश्चात एन.सी.एफ.-एफ.एस. के पाठ्यचर्या संबंधी उपागम के अनुरूप पाठ्यपुस्तकों की संरचना की गई। ये पाठ्यपुस्तकें कक्षा में सीखने और परिवार तथा समुदाय में सार्थक अधिगम-संसाधनों के साथ सीखने को महत्व देते हुए बच्चों के व्यावहारिक जीवन से जुड़ने का प्रयास करती हैं।

आधारभूत स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा *तैत्तिरीय उपनिषद्* में वर्णित 'पंचकोश विकास' (मानव व्यक्तित्व के पाँच कोशों का विकास) की आधारभूत अवधारणा से संबद्ध है। एन.सी.एफ.-एफ.एस.

© NCERT not to be republished

सीखने के पाँच आयामों, जैसे— शारीरिक एवं गत्यात्मक, समाज-संवेगात्मक, भाषा एवं साक्षरता, संस्कृति तथा सौंदर्यबोध को पंचकोश की भारतीय परंपरा के साथ जोड़ती है। ये पाँच कोश इस प्रकार से हैं— अन्नमय कोश, प्राणमय कोश, मनोमय कोश, विज्ञानमय कोश और आनंदमय कोश। इसके अतिरिक्त, यह घर पर अर्जित बच्चों के अनुभवजन्य ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण को एकीकृत करने पर भी ध्यान केंद्रित करता है जिन्हें विद्यालय परिसर में विकसित किया जाएगा।

आधारभूत स्तर की पाठ्यचर्या, जिसमें कक्षा 1 और 2 भी समाहित हैं, सीखने के खेल आधारित उपागम को समुचित रूप से व्याख्यायित करती है। इस दृष्टिकोण के अनुसार पाठ्यपुस्तकें सीखने की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण अंश हैं, तथापि यह समझना भी आवश्यक है कि पाठ्यपुस्तकें अनेक शिक्षाशास्त्रीय उपकरणों एवं पद्धतियों, जिनमें गतिविधियाँ, खिलौने, बातचीत आदि भी समाहित हैं, में से केवल एक उपकरण है। यह पुस्तकों से सीखने की प्रचलित प्रणाली से अधिक सुखद खेल आधारित एवं दक्षता आधारित अधिगम प्रणाली की ओर उन्मुख करती है जहाँ बच्चे का किसी कार्य को स्वयं करते हुए सीखना महत्वपूर्ण हो जाता है। अत: यह पाठ्यपुस्तक जो आपके हाथ में है, इस आयु वर्ग के बच्चों के लिए खेल आधारित शिक्षाशास्त्रीय उपागम को प्रोत्साहित करने वाले एक उपकरण के रूप में देखी जानी चाहिए।

प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक दक्षता आधारित सामग्री को सरल, रोचक और आकर्षक रूप में प्रस्तुत करने का एक प्रयास है। इस पाठ्यपुस्तक को समावेशी एवं प्रगतिशील बनाने के लिए पाठों और चित्रों की प्रस्तुति के माध्यम से अनेक रूढ़ियों को तोड़ा गया है। परंपरा, संस्कृति, भाषा-प्रयोग तथा भारतीयता समेत स्थानीय संदर्भों की बच्चों के सर्वांगीण विकास में महती भूमिका इस पुस्तक में परिलक्षित होती है। इस पाठ्यपुस्तक को बच्चों के लिए आकर्षक एवं आनंददायी बनाने का प्रयास किया गया है। पुस्तक में कला और शिल्प का बेजोड़ संयोजन है जिससे बच्चे गतिविधियों में अंतर्निहित सौंदर्यबोध की सराहना कर सकते हैं। यह पाठ्यपुस्तक बच्चों को स्वयं से संबंधित अवधारणाओं को अपने संदर्भों में समझने की स्थितिजन्य जागरूकता प्रदान करती है। यद्यपि इनमें विषय-वस्तु का बोझ कम है, तथापि ये पाठ्यपुस्तकें सारगर्भित हैं। इस पाठ्यपुस्तक में खिलौनों और खेलों के माध्यम से सीखने की अलग-अलग युक्तियों के साथ-साथ अन्य गतिविधियाँ और प्रश्न, जो बच्चों में तार्किक चिंतन और समस्या को सुलझाने की योग्यता विकसित करने के लिए प्रेरित करते हैं, को भी सम्मिलित किया गया है। इसके अतिरिक्त, पाठ्यपुस्तकों में ऐसी पर्याप्त विषय सामग्री और गतिविधियाँ भी हैं जो बच्चों में पर्यावरण के प्रति आवश्यक संवेदनशीलता विकसित करने में सहायक हैं। साथ ही ये पाठ्यपुस्तकें हमारे राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों को *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* की संस्तुतियों के अनुरूप उनके द्वारा विकसित किए जाने वाले संस्करणों में स्थानीय परिदृश्य के साथ-साथ अन्य तत्वों के समायोजन/अनुकूलन की संभावना भी उपलब्ध कराती हैं।

© NCERT not to be republished

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, इस पाठ्यक्रम और शिक्षण-अधिगम सामग्री विकसित करने के लिए गठित समिति द्वारा किए गए कठोर परिश्रम की सराहना करती है। मैं समिति की अध्यक्षा प्रो. शशि कला वंजारी तथा अन्य सभी सदस्यों को समय पर और इतने उत्कृष्ट रूप से इस कार्य को संपन्न करने के लिए साधुवाद देता हूँ। मैं उन सभी संस्थानों और संगठनों का भी आभारी हूँ, जिन्होंने इस कार्य को संभव बनाने में उदारतापूर्वक सहायता प्रदान की है। मैं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के लिए गठित राष्ट्रीय संचालन समिति के अध्यक्ष डॉ. के. कस्तूरीरंगन व इसके सदस्यों तथा मैंडेट समूह के अध्यक्ष प्रो. मंजुल भार्गव व अन्य सदस्यों के साथ ही समीक्षा समिति के सदस्यों को भी उनके समयोचित मार्गदर्शन एवं मूल्यवान सुझावों के लिए विशेष रूप से धन्यवाद देता हूँ।

एक संस्था के रूप में भारत की विद्यालयी शिक्षा में सुधार और इसके लिए विकसित अधिगम तथा शिक्षण सामग्री की गुणवत्ता को निरंतर समुन्नत करने के लिए प्रतिबद्ध राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् इन पाठ्यपुस्तकों को और अधिक परिष्कृत करने के लिए अपने समस्त हितधारकों से महत्वपूर्ण टिप्पणियों और सुझावों की अपेक्षा करती है।

प्रोफेसर दिनेश प्रसाद सकलानी
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

27 जनवरी 2023
नई दिल्ली

© NCERT not to be republished

© NCERT
not to be republished

पाठ्यपुस्तक के बारे में

प्रिय शिक्षक साथियो,

आप जानते हैं कि सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में पाठ्यपुस्तक केवल एक उपकरण और माध्यम है जो बच्चों में उन अनंत क्षमताओं को विकसित करने में सहायक है जिनके बीज उनमें पहले से ही हैं। आप सभी से यह आग्रह है कि पाठ्यपुस्तक का उपयोग करते हुए और स्वतंत्र रूप से भी बच्चों को कक्षा-कक्ष के इर्द-गिर्द फैली अनंत प्रकृति से अवगत कराएँ; उन्हें स्वयं खोज-बीन करके सीखने के लिए प्रोत्साहित करें; उन्हें अपनी बात कहने के अवसर दें; सही-गलत का फैसला न लेते हुए बच्चों के साथ एक संवाद में शामिल हों।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार भाषा राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देने और न्यायप्रिय समाज को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस नीति में बच्चों की शिक्षा में भाषा और साक्षरता के विकास को बहुत महत्व दिया गया है। यह माना जाता है कि भाषा और साक्षरता की ठोस नींव बच्चों के लिए अन्य विषयों को सीखने में बहुत सहायक होती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बुनियादी स्तर (फाउंडेशनल स्टेज) पर बच्चों में भाषा के विकास के साथ-साथ सतत सीखने की कला, समस्या-समाधान, तार्किक और रचनात्मक सोच के विकास पर भी बहुत बल दिया गया है। इस स्तर पर भाषा के साथ-साथ अन्य विषयों और गतिविधियों में भारतीय परंपरा, सांस्कृतिक मूल्य, चरित्र निर्माण, नैतिकता, करुणा और पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता को समेकित रूप में सम्मिलित करने की भी अनुशंसा की गई है।

कक्षा 1 की हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तक ***सारंगी*** का सृजन करते समय निम्न बातों का ध्यान रखा गया है –

1. पढ़ने-लिखने की शुरुआत के लिए बच्चों के जीवन से जुड़ी बातों को आधार बनाया गया है जिससे यह प्रक्रिया सहज और अर्थपूर्ण हो।
2. भाषा हमारे जीवन का अभिन्न अंग है जो हमें संप्रेषण के साथ-साथ सोचने, समझने, प्रश्न पूछने आदि में सहायक है। रोचक बात यह भी है कि विभिन्न कार्यों के लिए जितना ज्यादा भाषा का प्रयोग होता है, उतनी ही तेजी से हमारी भाषा का विकास भी होता है। अत: इस पुस्तक में अपनी भाषा में बातचीत करने, सुनकर कुछ करने, कहानी और कविताओं का आनंद लेने, ध्वनि और शब्दों की पहचान के साथ खेलने, कला एवं संगीत से जुड़ी गतिविधियों में भाग लेने के अनेक अवसर दिए गए हैं। ये अवसर अलग-अलग संदर्भों में दिए गए हैं और बार-बार दिए गए हैं।
3. इस पुस्तक में पाँच ऐसे संदर्भों को चुना गया है जो बच्चों के जीवन से जुड़े हैं— **परिवार, जीव-जगत, हमारा खान-पान, त्योहार और मेले तथा हरी-भरी दुनिया।**

© NCERT not to be republished

4. सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि कक्षा में बच्चों के संदर्भ की वस्तुओं/घटनाओं/व्यक्तियों के साथ इस पुस्तक में दी गई पठन सामग्री को जोड़ा जाए। इस हेतु सुझाव भी दिए गए हैं।
5. हर पाठ में लगभग सारी दक्षताओं का ध्यान रखा गया है। बच्चों के दृष्टिकोण से पाठों को रोचक बनाने के लिए कार्यों में विविधता लाने का प्रयास किया गया है।

पाठ्यचर्या लक्ष्य

बुनियादी स्तर (फाउंडेशनल स्टेज) के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2022) में भाषा के संदर्भ में निम्नलिखित पाठ्यचर्या लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं –

- **CG-9 बच्चे दैनिक जीवन के लिए प्रभावी संप्रेषण की कुशलता विकसित करते हैं।**
- **CG-10 बच्चे पहली भाषा (L1) में पढ़ने और लिखने में निपुणता विकसित करते हैं।**

इस रूपरेखा के अनुसार भाषा सीखने-सिखाने के लिए भाषा-शिक्षण के चारों स्तंभों पर कार्य करना महत्वपूर्ण है। ये चार स्तंभ हैं— मौखिक भाषा का विकास, शब्द पहचान, पढ़ना और लिखना।

मौखिक भाषा का विकास – बेहतर ढंग से सुनकर समझना, मौखिक शब्दावली का विकास और साथियों व अन्य जानकार लोगों (जैसे– बड़े विद्यार्थी, शिक्षक, माता-पिता) के साथ बातचीत और चर्चा का उपयोग सीखने के लिए करना।

शब्द पहचान – इसमें प्रिंट जागरूकता और ध्वनि जागरूकता, प्रतीकों और ध्वनि का संबंध, लिखित शब्द पहचानना और शब्दों को लिखना शामिल है।

पढ़ना – लिखित सामग्री से अर्थ का निर्माण करना और इसके विषय में आलोचनात्मक/समीक्षात्मक ढंग से चिंतन करना।

लिखना – तार्किक और व्यवस्थित तरीके से विचारों या सूचनाओं की प्रस्तुति के साथ-साथ शब्दों को सही ढंग से लिखने की क्षमता।

इस पुस्तक में हर विषय के इर्द-गिर्द चुनी पठन सामग्री में इन चार स्तंभों को निम्न प्रकार से बाँटा गया है –

मौखिक भाषा का विकास

पुस्तक में अलग-अलग भाग हैं, जैसे– 'चित्र और बातचीत', 'कविता', 'आओ कुछ बनाएँ', 'खेल-खेल में' और 'खोजें-जानें'। इन सभी का प्रमुख उद्देश्य बच्चों में मौखिक भाषा का विकास करना है। इसके साथ-साथ बच्चे मिलकर कुछ बनाते समय एक-दूसरे के विचारों को सुनेंगे, 'खोजें-जाने' क्रियाकलापों के दौरान अपने परिवार एवं समुदाय के लोगों के साथ बातचीत कर कुछ समझने का प्रयास करेंगे, आदि। उदाहरण के लिए, 'गिलहरी की कहानी' में चित्रों को देखकर कहानी बनाना और उसे अपनी भाषा में कहना/'अंगूठे की छाप' से अपनी पसंद के चित्र बनाना आदि।

शब्दों को पहचानना एवं गढ़ना

'शब्दों का खेल' कहानी और कविता के बाद दिया गया है। एक साथ पूरी वर्णमाला सीखने के बजाय कुछ वर्णों और मात्राओं से अवगत कराते हुए शब्द बनाने के कार्य दिए गए हैं, जैसे– 'आलू की सड़क'

© NCERT not to be republished

कहानी में 'ब' से शुरू होने वाले शब्दों को पहचानना और लिखना सिखाया गया है। 'झूलम-झूली' कविता में 'उ' और 'ऊ' ध्वनि की आकृति एवं उनकी मात्राओं की पहचान करना, शब्दों का दूसरा साथी खोजना, लिखना और पढ़कर सुनाना जैसे अभ्यास दिए गए हैं, जिसमें बच्चों से यह अपेक्षा की गई है कि वे छुप्पम, झूलम, पकड़म आदि शब्दों की समान लय वाले शब्द बनाएँगे। शब्दों के खेल में जो शब्द है, वे कविता या कहानी से लिए गए हैं। अन्य शब्द बच्चों के संदर्भ से ही लिए गए हैं और उनके भी चित्र दिए गए हैं, ताकि शब्दों का खेल सार्थकता से हो। आनंदमयी और सार्थक भाषा शिक्षा के लिए 'आओ बूझें पहेली' और 'झटपट कहिए' भी है। उदाहरण के लिए, 'अप्पू के अप्पा अप्पम लेने अनोखे अनंत नगर आए' आदि।

पढ़ना

'सुनें कहानी', 'मिलकर पढ़िए' और 'कविता' आदि भागों में बच्चों के लिए पढ़ने की विविध दक्षताओं को विकसित करने के अवसर हैं, जैसे मिलकर पढ़ते समय बच्चे शिक्षक के साथ मिलकर और बाद में अपने मित्रों के साथ मिलकर पढ़ेंगे। पढ़ते समय कहानी के चित्रों को देखकर अनुमान लगाना, फिर कहानी सुनकर बातचीत करना, शब्दों को चित्र रूप में समझना, कुछ प्रश्नों के उत्तर देना आदि से बच्चे 'पढ़ना माने अर्थ गढ़ना' संकल्पना को आत्मसात कर पाएँगे। उदाहरण के लिए, 'होली' कविता में समान लय वाले शब्द खोजने के लिए कहा गया है। इसी प्रकार 'रानी भी' कहानी में बातचीत के लिए ऐसे प्रश्न शामिल किए गए हैं कि "माँ ने रानी को स्कूल क्यों नहीं जाने दिया होगा?" ऐसे प्रश्न अनुमान लगाने में सहायता करेंगे।

लिखना

हम सभी जानते हैं कि लिखने की शुरुआत चित्रों से होती है और फिर चित्रों के साथ बच्चे शब्द और धीरे-धीरे वाक्य लिखना आरंभ करते हैं। यहाँ प्रयास किया गया है कि बच्चे अपने अनुभवों और विचारों को चित्रों के माध्यम से बताएँ और फिर उन पर कुछ शब्द शिक्षक की सहायता से लिखें। अन्य भाग जैसे 'कविता', 'सुनें कहानी' और 'मिलकर पढ़िए' आदि में भी लिखने के अवसर हैं। यहाँ लिपि को समझने और लिखने पर भी बल दिया गया है। उदाहरण के लिए, अक्षरों को जोड़कर शब्द बनाकर लिखना, चित्रों को देखकर शब्द लिखना, दिए गए विषय पर अपनी बात कहना और लिखना। यह लेखन चित्र भी हो सकते हैं और वाक्य भी। इन सभी में शिक्षक की सहायता शामिल है।

बच्चों में इन सभी दक्षताओं के विकास के लिए यह आवश्यक है कि इन चारों स्तंभों पर नियमित रूप से कार्य हो। अत: इस पाठ्यपुस्तक में पाँच संदर्भों के इर्द-गिर्द पढ़ने, लिखने, शब्द पहचानने और बातचीत के विविध आयामों को सम्मिलित किया गया है। आइए, इन आयामों के विषय में सविस्तार चर्चा करें।

सृजनशील शिक्षक दी गई पठन-पाठन सामग्री को अत्यंत रोचक और प्रभावी तरीके से बच्चों के साथ मिलकर रच सकते हैं। यहाँ बस कुछ सुझाव हैं। हमें आशा है कि आप अपनी कक्षा में विविधता

© NCERT not to be republished

लाएँगे, बच्चों के संदर्भ के आधार पर शब्दों का खेल, खेल गीत, कविताएँ और कहानियाँ शामिल करेंगे। विविध संसाधनों की सहायता से कक्षा को और भी रोचक बनाएँगे।

बातचीत

इस पुस्तक में लिए गए पाँचों संदर्भों में बातचीत की ढेर सारी संभावनाएँ हैं। उदाहरण के लिए, 'हमारा खान-पान' में आप बच्चों से निम्न प्रश्नों से बातचीत शुरू कर सकते हैं—

आगे आने वाले कुछ दिनों में हम 'हमारा खान-पान' के बारे में बातचीत करेंगे, पढ़ेंगे, लिखेंगे और समझेंगे। इसकी शुरुआत बातचीत से करेंगे। आपको खाने में सबसे ज्यादा क्या पसंद है? क्या आपको पता है कि वह कैसे बनता है? पता कीजिए कि आपकी कक्षा में मीठा, नमकीन और तीखा कितने बच्चों को पसंद है? खाना खाने से जुड़ी कुछ अच्छी आदतें बताइए। चिड़िया, कौआ, बत्तख, मेंढक आदि को खाने में क्या पसंद होगा?

जैसे-जैसे बच्चों के उत्तर आएँगे, उस तरह से बातचीत को आगे बढ़ाया जा सकता है। बातचीत की यह गतिविधि हर दिन करवाई जा सकती है। एक दिन में सभी बच्चों को मौका नहीं मिल पाएगा, इसीलिए हर दिन यह गतिविधि कक्षा में करवाएँ। समय-सारणी में सर्कल टाइम के लिए जगह है। उस समय इस तरह की बातचीत को जगह दी जा सकती है।

'बातचीत' के अंतर्गत दी गई गतिविधियों का एक और महत्वपूर्ण पहलू है— बहुभाषिकता। अर्थपूर्ण सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में आवश्यक है कि बच्चे अपनी भाषा में खुलकर अपने विचार रख सकें। कक्षा-कक्ष की हर गतिविधि में इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है।

सुनें कहानी

इसके अंतर्गत दी गई कहानियों को शिक्षक बच्चों को एक से अधिक बार पढ़कर सुनाएँ।

कुछ तरीके इस प्रकार हो सकते हैं— कहानी पढ़कर सुनाने से पूर्व बच्चों से कहानी के चित्र देखकर कहानी गढ़ने को कहें। यह कार्य आप बच्चों के छोटे समूह बनाकर करवा सकते हैं। उदाहरण के लिए 'मीना का परिवार' कहानी पढ़ते समय बीच में बच्चों से एक या दो प्रश्न पूछें, जैसे– 'आपको क्या लगता है कि कहानी में आगे क्या होगा?' आदि। कहानी के बाद दिए गए 'बातचीत के लिए' प्रश्नों पर बच्चों से बातचीत कीजिए। यहाँ कोई उत्तर सही या गलत नहीं है, बल्कि प्रयास यह रहे कि बच्चे अपने मन की बात या उन्हें जो समझ में आया, वह निःसंकोच कह सकें। ये कुछ सुझाव हैं, इनके अतिरिक्त भी आप विविध क्रियाकलाप करवा सकते हैं। उदाहरण के लिए, 'मिठाई' कहानी में बच्चों को कहानी में कुछ अन्य जानवरों को जोड़कर कहानी को आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। बच्चे कहानी को अपनी भाषा में कक्षा या घर में सुना सकते हैं।

बातचीत के दौरान जो शब्द कहानी में और बातचीत में बार-बार आ रहे हैं, उन तीन से चार शब्दों को आप बोर्ड पर धीरे-धीरे लिखें। बच्चों से अनुमान लगाकर इन शब्दों की पहचान करने को भी कहा जा सकता है। जैसे-जैसे आगे बढ़ेंगे, बच्चे कुछ अन्य वर्ण और मात्राएँ पहचानना सीख जाएँगे। आप बच्चों

© NCERT not to be republished

को पिछले पाठों में आई कहानियों और कविताओं में से शब्दों को पहचानने का कार्य दें। इसी तरह की अन्य गतिविधियाँ भी करवाई जा सकती हैं।

मिलकर पढ़िए

इस हिस्से में उन कहानियों का चुनाव किया गया है, जिनमें दोहराव है। यह दोहराव वाक्यों के स्तर पर है। कहानी के कथानक में भी दोहराव है। आपने यह देखा होगा कि दोहराव में बच्चों को आनंद आता है। दोहराव से बच्चों को अनुमान लगाने में भी आसानी होती है। उदाहरण के लिए, 'भुट्टे' कहानी में 'नीना', 'नाना', 'नानी', 'भुट्टे' शब्दों में दोहराव है। इन कहानियों को पढ़ने से पूर्व चित्र दिखाकर बच्चों से बातचीत कीजिए। फिर उँगली रखते हुए बच्चों के साथ मिलकर कहानी पढ़िए। जिन शब्दों का दोहराव है, उन्हें बोर्ड पर लिख दीजिए। उनके चित्र बन पाएँ, तो अवश्य बनाइए। फिर, कहानी को पुन: पढ़िए और दूसरी बार पढ़ते समय दोहराव वाले वाक्यों पर बच्चों को अनुमान लगाने के लिए कहिए। कुछ दिनों बाद, छोटे समूह में बच्चों को मिलकर पढ़ने के लिए कहिए। उनका अवलोकन कीजिए। उन्हें जहाँ-जहाँ सहायता की आवश्यकता है, उन शब्दों को 'नोट' कर लीजिए। अगली कक्षा में इन शब्दों को आप 'शब्दों का खेल' में शामिल करके इन पर गतिविधियाँ करवा सकते हैं। इन सभी कार्यों का उद्देश्य यह है कि बच्चे दी गई पठन सामग्री को धीरे-धीरे पढ़ना सीख जाएँ। हमें याद रखना होगा कि हर बच्चे का सीखने का तरीका और गति अलग-अलग होती है। हम उन पर किसी भी प्रकार का दबाव बिल्कुल भी न डालें। हाँ, उन्हें सार्थक अवसर अवश्य दें और उनका उत्साहवर्धन करें। इस पुस्तक में 'मिलकर पढ़िए' में कई अवसर हैं। ऐसा इसीलिए, क्योंकि इन अवसरों से ही बच्चे पढ़ना सीखते हैं। आप भी पुस्तकालय से बच्चों को उनके स्तर के अनुरूप रोचक बाल साहित्य अथवा पुस्तकें अवश्य दें।

शब्दों का खेल

बच्चों की भाषा में जो शब्द अधिकतर आते हैं, उन शब्दों के वर्ण और स्वरों को ध्यान में रखते हुए 'वर्ण समूह' के आधार पर 'शब्दों का खेल' की रचना की गई है। उदाहरण के तौर पर, आप देखेंगे कि पहली इकाई में कहानियों के माध्यम से बच्चों को 'दादा', 'दादी', 'नाना', 'नानी', 'मामा', 'मामी', 'पिता', 'भाई', 'माँ' शब्दों के प्रिंट रूप से परिचित कराया गया है। फिर 'शब्दों का खेल' में परिवार के सदस्यों के नामों के साथ कार्य दिए गए हैं, जैसे इस कहानी में दिवाकर, दादाजी और दादीजी हैं। आँखें बंद करके इन शब्दों को बोलिए। इनकी पहली ध्वनि बताइए। फिर 'दादा', 'दादी' शब्द लिखने के लिए कहा गया है। इसी तरह से 'मीना', 'नाना', 'मामी' आदि शब्दों पर कार्य करवाया गया है। मीना, नानी, नाना, मामा आदि शब्दों का चुनाव भी इसी उद्देश्य से किया गया है कि शब्दों के खेल के बाद 'मिलकर पढ़ने' का कार्य बच्चे और अधिक आनंद के साथ कर पाएँगे। इसी तरह का प्रयास अन्य इकाइयों में भी किया गया है। शिक्षकों से अनुरोध है कि वे बच्चों की भाषा के अन्य शब्द भी लें और उनसे ध्वनियाँ पहचानने का कार्य करवाएँ। शब्दों को इमली के बीजों से या कंकड़ या छोटे पत्थरों से भी लिखने का प्रयास करवाया जा सकता है। फिर पेंसिल से लिखने में बच्चों को आसानी होती है। पुस्तक में पहेलियाँ भी दी गई हैं जिससे बच्चे अपने शब्द बना सकें, जैसे– 'दिए गए अक्षरों

© NCERT not to be republished

को जोड़कर अपने शब्द बनाइए' से संबद्ध अभ्यास। 'प्रश्न और पहेली' शीर्षक के अंतर्गत दी गई ये पहेलियाँ देखी जा सकती हैं— 'मेरे पिता के पिता, मेरे .....।', 'मेरे नाम का उल्टा उसका नाम, मैं हूँ नीरा तो वह है .....।', 'नीना की नानी का उल्टा है .....!' इसके अतिरिक्त शिक्षक भी इस तरह की पहेलियाँ बनाकर बच्चों को दें। हो सकता है कि कक्षा 1 के अंत तक बच्चे ही ऐसी पहेलियाँ एक-दूसरे के लिए बनाना सीख जाएँ!

पुस्तक के अंतिम पृष्ठों पर वर्णमाला का गीत दिया गया है। जैसे-जैसे बच्चे कुछ वर्ण सीख लें, उन्हें वर्णमाला से उन वर्णों की पहचान करने के लिए कहिए। इस गतिविधि से वे देख पाएँगे कि वर्णमाला में कितने स्वर और व्यंजन हैं; उन्होंने कितने सीख लिए हैं और कितने सीखने शेष हैं। बच्चों को आनंद के लिए वर्णमाला गीत भी मौखिक तौर पर गाने में मदद कीजिए।

आनंदमयी कविता

बच्चे हाव-भाव के साथ, अभिनय करते हुए कविताओं को गाएँ, जैसा कि हम अपनी कक्षाओं में हमेशा से ही करते आ रहे हैं। कविताओं को चार्ट पेपर पर बड़े अक्षरों में लिख दें। फिर गाते वक्त बच्चे इनको देखकर, शब्दों पर उँगली रखकर भी गा सकते हैं। कविताओं का आनंद लेना मुख्य उद्देश्य है, जैसे इकाई 2 'जीव-जगत' में 'कबरी झबरी बकरी' कविता में शब्दों का चयन और शब्दों का दोहराव बच्चों को कविता गाने का आनंद देता है। पूरी कविता 'बकरी', 'कबरी', 'झबरी' शब्दों के आस-पास घूमती है। इसके साथ-साथ कविताओं पर चर्चा करना, नई कविताएँ गढ़ना, कविताओं में आए शब्दों के साथ कार्य करना आदि अवसर भी दिए गए हैं। उदाहरण के लिए, 'कबरी झबरी बकरी' कविता में बच्चों से यह कहा गया है कि वे 'झबरा', 'कबरा', 'बकरा' आदि शब्दों से तुकबंदी करते हुए नई कविता की रचना करें। ऐसे अनेक अवसर 'आनंदमयी कविता' का हिस्सा हैं।

चित्रकारी और लेखन

बच्चे चित्रों द्वारा खुद के विचारों और भावनाओं को व्यक्त करते हैं। इन चित्रों में हमें बच्चों की अवलोकन क्षमता, विचार करने के कौशलों के कई प्रमाण मिलते हैं। इसीलिए लिखना सीखने की प्रक्रिया में चित्रों का महत्वपूर्ण योगदान है। इसीलिए कक्षा 1 और 2 की पुस्तकों में 'चित्रकारी और लेखन' को सम्मिलित किया गया है, जैसे– 'दिए गए चित्र में आप क्या-क्या देख पा रहे हैं? कुछ नाम लिखिए।' हर गतिविधि संदर्भ आधारित है, उस पर कहानी या कविताएँ बच्चे पढ़ चुके हैं, बातचीत कर चुके हैं। उसके बाद उन्हें चित्रकारी और लेखन का कार्य दिया गया है। बच्चों से आप ऐसे भी किसी कविता या कहानी या अपने मन से चित्र बनाने के लिए कह सकते हैं। जो भी शब्द उन्होंने सीखे हैं, उन्हें लिखने में उनकी मदद कीजिए। उदाहरण के लिए, 'मेला' कविता के अंतर्गत दिया गया यह अभ्यास— 'मान लीजिए कि आप भी इस मेले में गए हैं। आप वहाँ क्या-क्या करेंगे? अपने मित्रों के साथ बातचीत कीजिए, चित्र बनाइए और कुछ शब्द भी लिखिए।' बच्चों के छोटे समूह में भी यह गतिविधियाँ आप करवा सकते हैं। बच्चे एक-दूसरे से भी बहुत कुछ सीखते हैं।

© NCERT not to be republished

खोजें-जानें

भाषा शिक्षण को बच्चों के संदर्भ से जोड़ने, संदर्भ से सीखने के अवसर प्रदान करने के लिए इन गतिविधियों को शामिल किया गया है। इनसे बच्चों में अपने समुदाय की समझ बढ़ेगी। अपने घर और आस-पड़ोस का भी वे महत्व समझेंगे। उदाहरण के लिए, परिवार के सदस्य के साथ आस-पास घूमना और छोटे-छोटे कीड़ों-मकोड़ों, जानवरों को देखना। वे क्या करते हैं; क्या खाते हैं; उनके रंग-रूप को देखना आदि। अपने आस-पास मिलने वाले पेड़-पौधों के नाम जानना और चित्र बनाना।

आओ कुछ बनाएँ

इन गतिविधियों का उद्देश्य है कि बच्चे जटिल कार्य के लिए मौखिक निर्देशों को समझें और उसी कार्य के लिए दूसरों को भी स्पष्ट मौखिक निर्देश दे सकें। इस कार्य में कला और भाषा के एकीकरण का प्रयास किया गया है। उदाहरण के लिए, 'अँगूठे की छाप से चित्र बनाना', 'कागज़ से कुत्ते का मुखौटा बनाना', 'तोरण बनाना' आदि।

खेल-खेल में

यहाँ पर खेल गीत गाना, खेलना, अभिनय करना आदि सम्मिलित किए गए हैं। खेल-खेल में निर्भीक अभिव्यक्ति कर पाने के अवसर देने से बच्चों की झिझक खत्म होती है, वे स्वयं के अनुभव को खुशी-खुशी सबके साथ साझा करने लगते हैं। शायद सीखने-सिखाने में यह सबसे महत्वपूर्ण पड़ाव है। उदाहरण के लिए, साथियों के साथ कविता में दिए खेल खेलना और चित्र बनाकर परिवार के लोगों को बताना, मिट्टी से खिलौने बनाना आदि।

इस पुस्तक में 'झटपट कहिए', 'आओ बूझें पहेली' आदि जैसी कुछ अन्य रोचक गतिविधियाँ भी दी गई हैं, उदाहरण के लिए, 'घर-घर, घड़ी-घड़ी घड़ी घूमती!'/ 'भालू को आलू भाया, भाया भालू को आलू'। शिक्षक अपने स्तर पर भी इस प्रकार की कुछ और सामग्री खोजें, स्वयं तैयार करें और उपयोग में लाएँ। इन सबके साथ-साथ एक सतत चलने वाला आवश्यक काम यह है कि पाठ्यपुस्तक की हर इकाई पर कार्य करते हुए शिक्षक स्वयं और बच्चों की सहायता से कुछ-न-कुछ सीखने-सिखाने की सामग्री (TLM) बनाते रहें और उन्हें कक्षा की दीवार पर लगाएँ या अन्य उपयुक्त तरीके से बच्चों के लिए उपलब्ध रखें और उनका उपयोग भी शिक्षण प्रक्रिया में करें। हर इकाई में नई सामग्री की आवश्यकता होगी। उपलब्ध सामग्री में निश्चित रूप से कुछ पुस्तकें भी होनी चाहिए और नियमित रूप से बच्चे पुस्तकों के साथ काम करें, समय-सारणी में इसकी जगह हो।

हमें पूरा विश्वास है कि हमारे शिक्षक इस पाठ्यपुस्तक की सामग्री का रचनात्मक उपयोग इसमें दिए उद्देश्यों और निर्देशों को ध्यान में रखते हुए करेंगे जिससे शिक्षण प्रभावी होगा और बच्चे आनंद के साथ भाषा सीखेंगे।

© NCERT not to be republished

© NCERT not to be republished

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

परामर्श

दिनेश प्रसाद सकलानी, *निदेशक*, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

मार्गदर्शन

शशिकला वंजारी, *पूर्व कुलपति*, एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय, मुंबई, महाराष्ट्र
अध्यक्ष, पाठ्यक्रम एवं अधिगम-शिक्षण सामग्री विकास समिति
सुनीति सनवाल, *आचार्य* एवं *अध्यक्ष*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
सदस्य समन्वयक, पाठ्यक्रम एवं अधिगम-शिक्षण सामग्री विकास समिति

सहयोग

कविता बिष्ट, *मुख्य अध्यापिका*, केंद्रीय विद्यालय, एन.सी.ई.आर.टी. परिसर, नई दिल्ली
चमन लाल गुप्त, *आचार्य* एवं *पूर्व अध्यक्ष*, हिंदी विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला, हिमाचल प्रदेश
चोन्हास ओराँव, *प्रभारी प्रधानाचार्य*, राजकीय माध्यमिक विद्यालय, जुरिआ, लोहरदागा, झारखंड
नम्रता दत्त, *प्रधानाचार्य* (सेवानिवृत्त), गाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश
नरेंद्र सिंह निहार, *पी.जी.टी. हिंदी*, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सी ब्लॉक, संगम विहार, दिल्ली
निशा बुटोलिया, *सहायक आचार्य*, अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलुरु
पटेल राकेश कुमार चंद्रकांत, हेड *टीचर*, नवा नदीसर प्राथमिक शाला, ब्लॉक गोधरा, पंचमहल, गुजरात
प्रिया यादव, जे.*पी.एफ.*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
बिनय पटनायक, *शिक्षा विशेषज्ञ*, झारखंड
मंजुल भार्गव, *सदस्य*, राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा के लिए गठित राष्ट्रीय संचालन समिति एवं *अध्यक्ष*, मैंडेट ग्रुप
याचना गुप्ता, *वरिष्ठ परामर्शदाता*, राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
रमेश कुमार, *सह आचार्य*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
विजय कुमार चावला, *पी.जी.टी.* हिंदी, राजकीय मॉडल सह वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, ग्योंग, कैथल, हरियाणा

© NCERT not to be republished

विनोद 'प्रसून', *हिंदी विभागाध्यक्ष*, दिल्ली पब्लिक स्कूल, ग्रेटर नोएडा
सुमन कुमार सिंह, *मुख्य अध्यापक*, उत्क्रमित माध्यमिक विद्यालय, कौड़िया बसंती, भगवानपुर हाट, सिवान, बिहार
सैयद मतीन अहमद, *आचार्य*, एस.सी.ई.आर.टी., तेलंगाना

समीक्षा समिति

के.वी. श्रीदेवी, *सहायक आचार्य*, पाठ्यचर्या अध्ययन एवं विकास विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
गजानन लोंढे, *निदेशक*, संवित रिसर्च फाउंडेशन, बेंगलुरु
ज्योत्स्ना तिवारी, *अध्यक्ष* एवं *आचार्य*, जेंडर अध्ययन विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
निशा बुटोलिया, *सहायक आचार्य*, अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलुरु
भरतभाई धोकई, *निदेशक*, कच्छ कल्याण संघ, समर्थ भारत, कच्छ, गुजरात
भारती कौशिक, *सह आचार्य*, सी.आई.ई.टी., रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
मंजुल भार्गव, *सदस्य*, राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा के लिए गठित राष्ट्रीय संचालन समिति एवं *अध्यक्ष*, मैंडेट ग्रुप
रंजना अरोड़ा, *आचार्य* एवं *अध्यक्ष*, पाठ्यचर्या अध्ययन एवं विकास विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
शशिकला वंजारी, *पूर्व कुलपति*, एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय, मुंबई, महाराष्ट्र
अध्यक्ष, पाठ्यक्रम एवं अधिगम-शिक्षण सामग्री विकास समिति
सी.वी. शिमरे, *आचार्य*, गणित एवं विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
सुनीति सनवाल, *आचार्य* एवं *अध्यक्ष*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

सदस्य समन्वयक

उषा शर्मा, *आचार्य*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
नीलकंठ कुमार, *सहायक आचार्य* (हिंदी), सी.आई.ई.टी., रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

© NCERT not to be republished

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, के. कस्तूरीरंगन, *अध्यक्ष*, राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा के लिए गठित राष्ट्रीय संचालन समिति और समिति के सभी अन्य सदस्यों तथा मंजुल भार्गव, *सदस्य*, राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा के लिए गठित राष्ट्रीय संचालन समिति एवं *अध्यक्ष*, मैंडेट ग्रुप और समिति के सभी सदस्यों; दिव्यांशु दवे, *संस्थापक निदेशक* एवं *पूर्व महानिदेशक*, सेंटर फॉर इनर एक्सीलेंस और *कुलपति (प्रभारी)*, बाल विश्वविद्यालय, गाँधीनगर, गुजरात तथा श्रीधर श्रीवास्तव, *संयुक्त निदेशक*, रा.शै.अ.प्र.प. के प्रति इस पुस्तक की समीक्षा में बहुमूल्य योगदान के लिए आभार व्यक्त करती है।

इस पुस्तक में रचनाओं को सम्मिलित करने की स्वीकृति देने के लिए परिषद् सभी रचनाकारों या उनके परिजनों एवं प्रकाशकों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती है। परिषद् रचनाओं के प्रकाशनार्थ अनुमति देने के लिए जयंती मनोकरन, बेंगलुरु एवं *अध्यक्ष*, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली (कितनी प्यारी है यह दुनिया); *प्रकाशक*, तूलिका प्रकाशन, चेन्नई (*काम* पुस्तक से 'रसोई' और *श्यामपट्ट* पुस्तक से 'पेंसिल' एवं 'मछली'); *प्रकाशक*, एकलव्य प्रकाशन, भोपाल (चंदा मामा दूर के, मुर्गा बोला कुकड़ू-कूँ, तीन साथी, हाथ हैं मेरे छोटे-छोटे); प्रभात, जयपुर (ईख बोली, कबरी झबरी बकरी); श्याम सुशील, दिल्ली (झूलम-झूली, कौन परिंदा); सुशील शुक्ल, भोपाल (खट-पट); चंदन यादव, भोपाल (आलू की सड़क, खतरे में साँप); रमेश तैलंग, मुंबई (वाह, मेरे घोड़े!); मनोज कुमार झा, पटना (रोटी अगर गोल न बने); रमेश थानवी, जयपुर (मेला); आस्तिक सिन्हा, गाज़ियाबाद (बरखा और मेघा); मधुर अथैया, बिहार (होली); आनंदवर्धन शर्मा, वाराणसी (श्रीप्रसाद की रचना 'दादा-दादी', 'बंद रहेगा', 'हम पढ़ते हैं' के लिए); राजा चौरसिया, कटनी (जन्मदिवस पर पेड़ लगाओ); शिवचरण सरोहा, दिल्ली, (हवा); अफ़सर मेरठी (चाँद का बच्चा); मीरा भार्गव, यू.एस.ए. (मीना का परिवार); मंजुल भार्गव, यू.एस.ए. (अक्षर गीत) के प्रति आभारी है।

परिषद्, रचनात्मक एवं जीवंत चित्रांकन के लिए पद्मश्री दुर्गा बाई, *लोक चित्रकार* (गोंड शैली, मध्य प्रदेश), भोपाल, मध्य प्रदेश; मयूख घोष, कोलकाता, पश्चिम बंगाल; राधेश्याम खैरवार, *लोक चित्रकार* (गोंड शैली, मध्य प्रदेश), भोपाल, मध्य प्रदेश; शुभम लखेरा, चंदेरी गाँव, मध्य प्रदेश; संतोष, *ग्राफ़िक डिज़ाइनर*, नई दिल्ली; हबीब अली, ग्वालियर, मध्य प्रदेश एवं अमृता यादव, भोपाल मध्य प्रदेश के प्रति आभार प्रकट करती है।

© NCERT not to be republished

पुस्तक विकास के विभिन्न चरणों में सहयोग के लिए परिषद् साकेत, *वरिष्ठ परामर्शदाता*, पाठ्यचर्या अध्ययन एवं विकास विभाग एवं ऋचा प्रसाद, *वरिष्ठ परामर्शदाता*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प.; मोहन शर्मा एवं कहकशां, *सहायक संपादक*, प्रकाशन प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प.; तरुण कुमार नोंगिया एवं मोहम्मद आतिर, *ग्राफ़िक डिज़ाइनर*, अयाज़, *डी.टी.पी. ऑपरेटर* एवं जितेंद्र कुमार, *टाइपिस्ट,* राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ, रा.शै.अ.प्र.प.; प्रियंका एवं गिरीश, *डी.टी.पी ऑपरेटर*, पूजा साहा, *अर्द्ध पेशेवर सहायक* (एस.पी.ए.), सपना, *टाइपिस्ट*, चंचल, *कंप्यूटर ऑपरेटर* एवं अभिनव प्रकाश, *एस.आर.ए.,* प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली के प्रति आभार व्यक्त करती है।

परिषद् विशेष रूप से ग्रीन ट्री डिज़ाइनिंग स्टूडियो प्रा.लि., नई दिल्ली का आभार प्रकट करती है जिनके अथक परिश्रम से यह पुस्तक इस रूप में आ सकी है।

इस पुस्तक को प्रकाशन हेतु अंतिम रूप देने के लिए परिषद् प्रकाशन प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प. तथा जे.पी. मैठाणीं, *सलाहकार संपादक* (संविदा), अतुल मिश्र, *संपादक* (संविदा), पवन कुमार बारियार, *इंचार्ज*, डी.टी.पी. प्रकोष्ठ, रियाज़ एवं उपासना, *डी.टी.पी. ऑपरेटर* (संविदा) के प्रयासों की सराहना करती है।

© NCERT not to be republished

कहाँ क्या है?

आमुख — iii

पाठ्यपुस्तक के बारे में — vii

इकाई 1: परिवार

1. मीना का परिवार — 2

* चंदा मामा दूर के — 7

2. दादा-दादी — 8

3. रीना का दिन — 11

4. रानी भी — 16

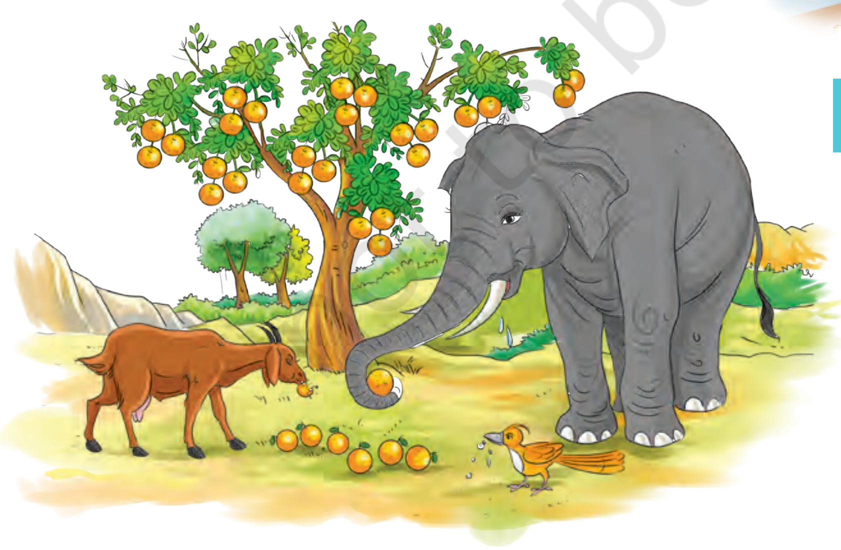

इकाई 2: जीव-जगत

* मुर्गा बोला कुकड़ू-कूँ — 25

5. मिठाई — 28

6. तीन साथी — 34

* तारांकित पाठ केवल पढ़ने के लिए हैं।

7. वाह, मेरे घोड़े! 43

8. खतरे में साँप 46

* कबरी झबरी बकरी 50

इकाई 3: हमारा खान-पान

9. आलू की सड़क 54

10. झूलम-झूली 60

11. भुट्टे 67

12. फूली रोटी 70

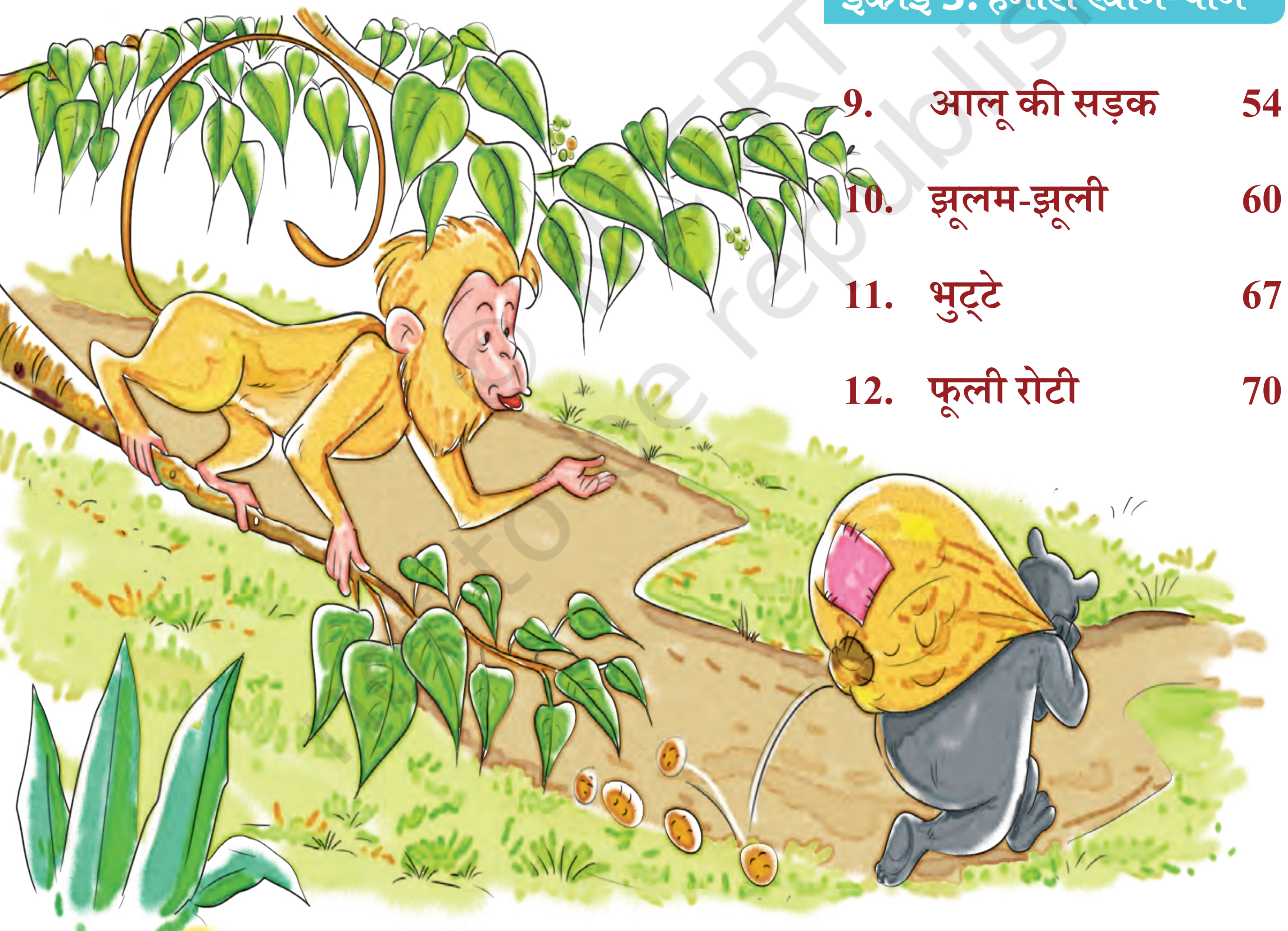

© NCERT not to be republished

इकाई 4: त्योहार और मेले

13. मेला 80

14. बरखा और मेघा 85

15. होली 87

16. जन्मदिवस पर पेड़ लगाओ 91

इकाई 5: हरी-भरी दुनिया

17. हवा 94

18. कितनी प्यारी है ये दुनिया 98

19. चाँद का बच्चा 103

* अक्षर गीत 111

इकाई 1: परिवार

चित्र और बातचीत

परिवार

शिक्षण-संकेत – बच्चों को पोस्टर देखने के लिए पर्याप्त समय दें। पोस्टर में दिखाए गए घर-परिवार एवं कार्यों के विषय में बातचीत करें। बातचीत के बिंदु इस प्रकार हो सकते हैं – 1. इस घर में कौन-कौन हैं? 2. वे क्या-क्या काम कर रहे हैं? 3. बच्चे रंगोली क्यों बना रहे होंगे? 4. क्या हथेली पर लट्टू चलाने पर गुदगुदी होती है? 5. आपको इस पोस्टर में सबसे अच्छी बात क्या लगी और क्यों? यह सुनिश्चित करें कि कक्षा के सभी बच्चों को अपने घर-परिवार के विषय में अपनी भाषा में कहने की स्वतंत्रता एवं अवसर मिलें।

1

सुनें कहानी

मीना का परिवार

मीना के परिवार में सात लोग हैं— उसके दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, मीना और उसका छोटा भाई दिवाकर। दिवाकर तीन साल का है। वह बहुत नटखट और चुलबुला है।

मीना को अपने भाई के साथ खेलने में बहुत आनंद आता है। दिवाकर भागकर कमरे के किवाड़ के पीछे छिप जाता है। मीना उसे ढूँढ़ लेती है तो वह ज़ोर-ज़ोर से हँसता है।

एक दो तीन चार

मीना उसे गिनती सिखाती है। दिवाकर कहता है, “एक, दो, तीन, चार” तो मीना कहती है, “चाचाजी हमको करते प्यार।”
तभी चाचाजी आ जाते हैं और दिवाकर को गोद में उठा लेते हैं।

मीना, चाचाजी और दिवाकर बरामदे में जाते हैं जहाँ दादी और माँ फल काट रही हैं। मीना के पिता और दादाजी गमलों में पानी दे रहे हैं।

© NCERT not to be republished

थोड़ी देर में माँ सबको फल देती हैं। सब लोग मिल-जुल कर खुशी से फल खाते हैं और आपस में बातें करते जाते हैं। कितना प्यार भरा है मीना का परिवार!

– मालती देवी

शिक्षण-संकेत – बच्चों के साथ उनके परिवार के विषय में बातचीत करें। परिवार में कौन-कौन हैं और वे घर में क्या-क्या काम करते हैं? आप घर में कौन-कौन से खेल खेलते हैं? आप घर के किन कामों को करने में सहायता करते हैं? आदि।

2024-25

बातचीत के लिए

1. इस कहानी में कौन-कौन है?
2. मीना के भाई का नाम क्या है?
3. आप अपने घर में कहाँ-कहाँ छिप सकते हैं?
4. "एक, दो, तीन, चार
   चाचाजी हमको करते प्यार।"
   चाचा की जगह दादा, नाना, नानी और अपने परिवार के अन्य लोगों के लिए इन पंक्तियों को गाइए।

शब्दों का खेल

1. **इस कहानी में दिवाकर, दादाजी और दादीजी हैं। आँखें बंद करके इन शब्दों को बोलिए। इनकी पहली ध्वनि बताइए।**
2. **'द' से शुरू होने वाले कुछ और शब्द बताइए।**
3. **नीचे दिए हुए शब्दों को लिखिए –**

   दादा   दादी

4. **इस कहानी में 'दादा' और 'दादी' शब्दों को पहचानकर उन पर घेरा लगाइए।**

शिक्षण-संकेत – बच्चे 'दी, 'दे', 'दो' आदि से शुरू होने वाले या अपनी भाषा के शब्द भी बता सकते हैं। उन्हें स्वीकार करें और बोर्ड पर लिखें। फिर बच्चों को अनुमान से पढ़ने के अवसर दें। शब्दों की ओर संकेत करते हुए आप पूछ सकते हैं— किसने कौन-सा शब्द दिया था? 'दिवाकर', 'दादाजी', 'दरवाज़ा', 'अदरक', 'चाँद', 'दस', 'गेंद' आदि शब्दों की सहायता से 'द' ध्वनि और उसकी आकृति की पहचान करवाएँ।

not to be republished © NCERT

5. यह कहानी मीना के परिवार के बारे में है। नीचे 'मीना' शब्द लिखने का प्रयास कीजिए –

मीना मीना मीना

6. नीचे दिए गए शब्दों को पढ़ने और लिखने का प्रयास कीजिए –

नाना, नानी, मामा, मामी, दादा, दादी, दीदी, माँ

नाना नानी मामा मामी

दादा दादी दीदी माँ

7. नीचे दिए गए चित्रों के नाम बताइए और पढ़िए –

नीम

नदी

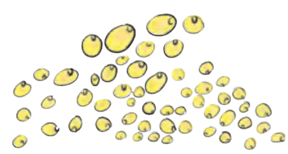

दाने

शिक्षण-संकेत – पृष्ठ 4 पर दिए गए चित्र में मीना के परिवार के सदस्यों की पहचान करवाएँ। नाना, नानी, दादा, दादी, मामी आदि रिश्तों के विषय में पूछें। 'मीना' शब्द के आधार पर 'म' और 'न' की ध्वनि एवं आकृति की पहचान करवाएँ। माला, मकान, नल आदि शब्दों की सहायता भी ली जा सकती है। बच्चों से 'द', 'म', 'न' की ध्वनियों वाले शब्द बताने के लिए कहें। बच्चों की मातृभाषा के शब्दों को भी स्वीकार करें।

© NCERT not to be republished

खेल गीत

चंदा मामा दूर के

चंदा मामा दूर के,
पुए पकाएँ बूर के;
आप खाएँ थाली में,
मुन्ने को दें प्याली में।
प्याली गई टूट,
मुन्ना गया रूठ।
लाएँगे नई प्यालियाँ,
बजा-बजा के तालियाँ,
मुन्ने को मनाएँगे,
हम दूध-मलाई खाएँगे।

साभार – एकलव्य

पहेली

दो बच्चे अपने स्कूल का रास्ता भूल गए हैं। स्कूल तक पहुँचने में उनकी सहायता कीजिए –

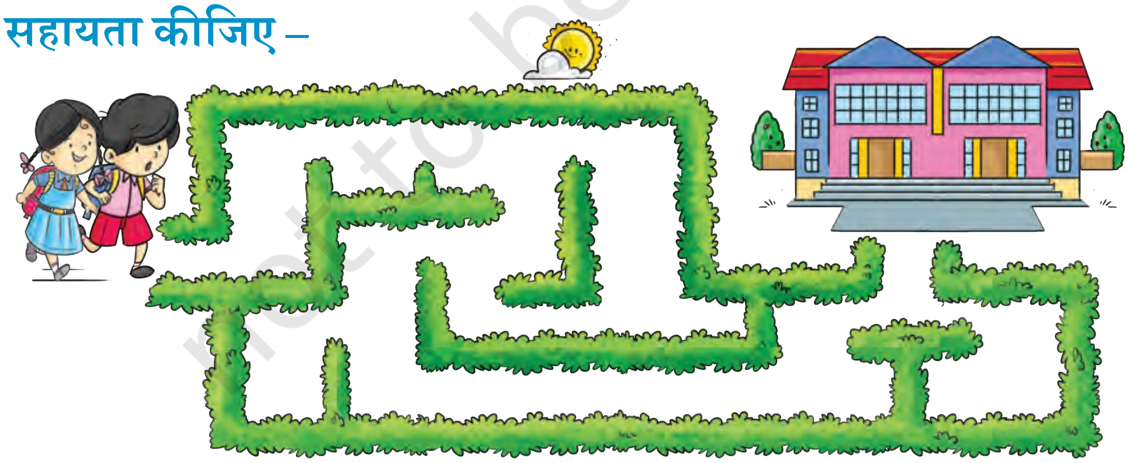

शिक्षण-संकेत – गोलाकार समूह में एक-दूसरे की हथेली पर ताली बजाते हुए ये खेल गीत बच्चों के साथ गाइए।

© NCERT not to be republished

दादा-दादी

एक हमारे दादाजी हैं,
एक हमारी दादी।
दोनों ही पहना करते हैं,
बिल्कुल भूरी खादी।
दादी गाना गाया करतीं,
दादाजी मुस्काते।
कभी-कभी दादाजी भी,
कोई गाना गाते।

– *श्रीप्रसाद*

1. **इस कविता में दादा और दादी की जगह नाना और नानी कहकर कविता को फिर से गाइए।**

शिक्षण-संकेत – हाव-भाव सहित कविता पाठ करते हुए बच्चों को अभिनय के लिए भी प्रोत्साहित करें।

© NCERT not to be republished

झटपट कहिए

अप्पू के अप्पा अप्पम लेने
अनोखे अनंतनगर आए।

घर-घर, घड़ी-घड़ी घड़ी घूमती!

शब्दों का खेल

1. ‘अप्पू अप्पा अप्पम’ की तरह ‘अ’ की जगह ‘म’, ‘न’, ‘द’ की ध्वनि से शब्द बनाकर सुनाइए।
2. निम्नलिखित शब्दों को सुनकर उनमें आई ध्वनियों की संख्या बताइए – दादा, दादी, नानी, नाना, मामा, मामी, दनादन, अपना, अनार, नमन।
3. बोल मेरी मछली, कितना पानी?
   नीचे दिए हुए चित्र को देखकर मछलियों की संख्या बताइए –

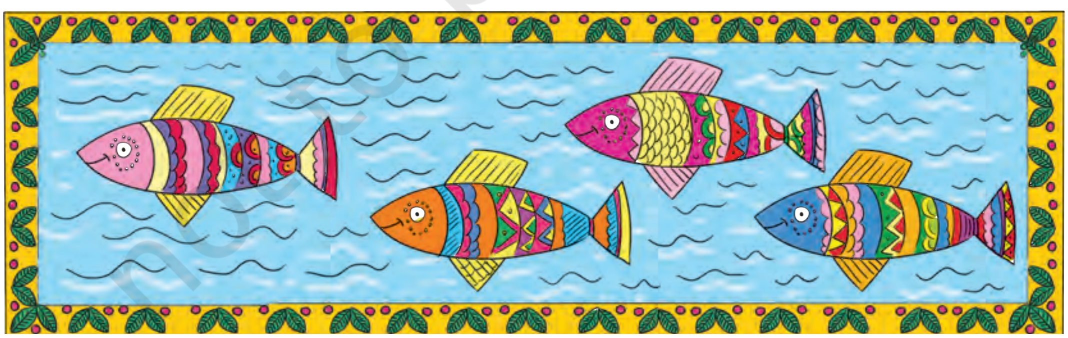

शिक्षण-संकेत – बच्चों के साथ मिलकर शब्दों का खेल खेलें। नए-नए सार्थक-निरर्थक शब्द बनवाएँ। ‘दादा’ शब्द में दो अक्षर हैं। इसी तरह शेष शब्दों में अक्षरों/ध्वनियों की संख्या पूछें। बच्चों से मछलियों की संख्या लिखवाएँ।

© NCERT not to be republished

आओ सुनें!

1. अपना अनार

इन शब्दों में पहली ध्वनि कौन-सी है?

2. जिन शब्दों की पहली ध्वनि 'अ' है, उनके आगे सही (✓) का चिह्न लगाइए –

अनार ◯

अमरूद ◯

अदरक ◯

माँ ◯

दादा ◯

घर ◯

खोजें-जानें

'दादा-दादी' और 'नाना-नानी' कविताओं को अपने परिवार के किसी सदस्य को सुनाएँ। उनसे 'परिवार' और 'घर' से जुड़ी कोई कविता या कहानी पूछें और सुनाने के लिए कहें।

शिक्षण-संकेत – हो सकता है कि सभी बच्चे यह कार्य करके न ला पाएँ। जो भी बच्चे ला पाएँ, उन्हें अपना कार्य कक्षा में साझा करने को कहें ताकि सभी बच्चे आनंद ले सकें। बच्चों को उनकी अपनी भाषा में गीत/कविता सुनने-सुनाने को प्रोत्साहित करें।

© NCERT not to be republished

3

सुनें कहानी

रीना का दिन

हर दिन रीना सुबह जल्दी उठती है। उठकर बिस्तर को ठीक से लगाती है।

नीम की दातुन से अपने दाँत साफ़ करती है। साबुन से नहाकर रीना स्वच्छ कपड़े पहनती है।

वह अपने बाल में तेल लगाकर कंघी करती है। रीना माँ के बनाए पराठे और सब्ज़ी आनंद के साथ खाती है। रीना माँ के गले लगती है और फिर स्कूल जाती है।

स्कूल के रास्ते में रीना अपनी सहेली दीपा से मिलती है।

दोनों एक-दूसरे से सुप्रभात कहती हैं और हँसती-खेलती स्कूल जाती हैं।

© NCERT not to be republished

स्कूल में प्रार्थना के बाद रीना अपनी कक्षा में जाती है। जैसे ही उनकी अध्यापिका कक्षा में आती हैं, सभी बच्चे खड़े हो जाते हैं और नमस्ते करते हैं। अध्यापिका भी मुस्कुराती हुई नमस्ते करती हैं।

रीना स्कूल में मन लगाकर पढ़ाई करती है।

वह अपनी सहेलियों के साथ खेलती है और थोड़ी शरारत भी करती है।

घर आकर वह हाथ-मुँह धोती है।

फिर वह अपनी स्कूल की सभी बातें अपने परिवार को बताती है।

रीना अपने प्यारे से छोटे भाई के साथ भी खेलती है।

रीना को रात को जल्दी ही नींद आ जाती है।

दादी प्यार से रीना को शुभ रात्रि कहकर सुला देती हैं।

© NCERT not to be republished

बातचीत के लिए

1. रीना सुबह अपनी सहेली से मिलने पर क्या कहती है?
2. रीना की दादी रात को सोने से पहले मीना से क्या कहती हैं?
3. आप क्या कहकर बड़ों का अभिवादन करते हैं?
4. घर पर जब कोई अतिथि आते हैं, तो आप क्या कहकर उनका स्वागत करते हैं?
5. अगर आपको रास्ते में कोई परिचित जन मिल जाएँ, तो आप क्या कहते हैं?

खोजें-जानें

पता कीजिए कि आपके सहपाठियों के घर पर अभिवादन कैसे करते हैं?

अभिनय सहित समझाइए कि आप –

- मंजन कैसे करते हैं?
- कैसे नहाते हैं?
- बाल कैसे बनाते हैं?
- खाना कैसे खाते हैं?
- हाथ कैसे धोते हैं?
- कैसे सोते हैं?

खेल-खेल में

मिट्टी से 'घर-घर' खेल की चीज़ें बनाइए, जैसे– चूल्हा, थाली, कटोरी आदि। अब अपने मित्रों के साथ मिलकर 'घर-घर' खेलिए।

शिक्षण-संकेत – अभिवादन संबंधी गतिविधि का उद्देश्य है कि बच्चे अपनी संस्कृति की विविधता को समझ सकें। बच्चों को चर्चा और अभिनय का कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करें। बच्चों को 'घर-घर' खेल खेलने की चीज़ें बनाने के लिए मिट्टी उपलब्ध करवाएँ। मिट्टी के खिलौने बनाने में बच्चों की सहायता करें।

© NCERT not to be republished

सबके घर

रेखा खींचकर पशु-पक्षियों को उनके घर तक पहुँचाइए –

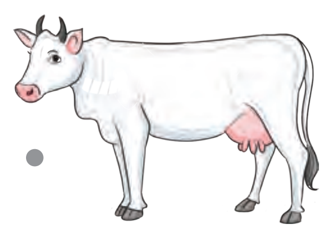

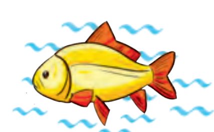

© NCERT not to be republished

चित्रकारी और लेखन

आपको अपने घर में क्या-क्या अच्छा लगता है और क्यों? चित्रों की सहायता से बताइए। इन शब्दों में से आप अपने चित्र के लिए कुछ शब्द चुन सकते हैं— रसोई, कमरा, बरामदा, आँगन, छज्जा, छत, माँ, पिता, दादी, दादा, कहानी, खीर, दूध आदि।

सोचिए और बताइए

आप घर में कौन-कौन से काम करते हैं? सही का चिह्न लगाइए –

हाथ हैं मेरे छोटे-छोटे,
काम करूँ मैं बड़े-बड़े।

साभार – एकलव्य

शिक्षण-संकेत – बच्चों से सुनें कि उन्होंने क्या बनाया है और उनके द्वारा कहे गए वाक्य उनके चित्रों के साथ लिखें। बच्चों को कुछ शब्द लिखने के लिए भी प्रोत्साहित करें।

© NCERT not to be republished

४

मिलकर पढ़िए

रानी भी

रमा और रानी दो बहनें हैं।

रानी हमेशा रमा के साथ रहती है।

रमा ने अपने बालों मे कंघी की।

रानी ने भी अपने बालों में कंघी की।

रमा ने चप्पल पहनी।

रानी ने भी चप्पल पहन ली।

© NCERT not to be republished

रमा ने अपना बस्ता
उठाया।

रानी ने भी एक झोला
उठा लिया।

रमा स्कूल जाने लगी।

माँ ने रानी को स्कूल नहीं जाने दिया।

रानी अभी बहुत छोटी है।

माँ ने रानी को समझाया, "रानी बेटी, तुम अभी बहुत छोटी हो। थोड़ी-सी बड़ी हो जाओ, तब तुम भी स्कूल चली जाना।"

साभार – बरखा क्रमिक पुस्तकमाला,
एन.सी.ई.आर.टी.

© NCERT not to be republished

1. अनुमान लगाकर शब्दों के साथ चित्रों को जोड़िए –

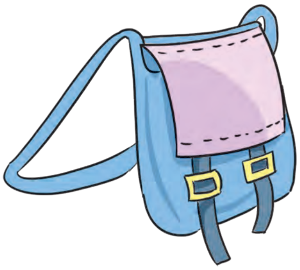

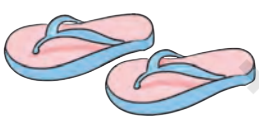

बस्ता

झोला

रानी

रमा

चप्पल

स्कूल

कंघा

बाल

© NCERT not to be republished

2. एक बार फिर से अनुमान लगाकर अपने शिक्षक के साथ 'रानी भी' कहानी को पढ़िए।

3. यह कहानी दो बहनों की है। उनके नाम बताइए।

उन दोनों बहनों के नाम लिखिए –

रानी रमा

4. क्या रानी रमा के साथ स्कूल गई?

◯ हाँ। रानी रमा के साथ स्कूल गई।

◯ नहीं। रानी रमा के साथ स्कूल नहीं जा पाई।

बातचीत के लिए

1. रानी रमा के साथ स्कूल क्यों जाना चाहती थी?
2. माँ ने रानी को स्कूल क्यों नहीं जाने दिया?

खोजें-जानें

अपने परिवार के लोगों से बातचीत कीजिए और जानिए कि उनका स्कूल कैसा था। उनके स्कूल का चित्र उनकी सहायता से बनाइए और कक्षा में सभी के साथ साझा कीजिए।
यह भी साझा कीजिए कि आपको उनके स्कूल में और अपने स्कूल में क्या अंतर दिखाई देता है?

शिक्षण-संकेत – 'रानी भी' की कहानी में आए शब्दों की सहायता से बच्चों को 'र' और 'ल' की ध्वनि और आकृति (अक्षर) से परिचित कराएँ, जैसे– 'रमा', 'रानी', 'चप्पल', 'बाल', 'झोला' आदि। बच्चों से भी इन ध्वनियों वाले शब्द अवश्य पूछिए।

© NCERT not to be republished

शब्दों का खेल

1. नीचे दिए गए शब्दों को सुनिए। बताइए कि पहली ध्वनि कौन-सी है। दूसरी ध्वनि कौन-सी है –

नाना नानी काका काकी मामा मामी
माँ रमा रानी बाल झोला

2. नीचे दिए गए अक्षरों की ध्वनि पहचानने और लिखने का अभ्यास कीजिए –

न – .... क – .... म – ....

प – .... र – .... ल – ....

3. नीचे दी गई ध्वनियों को सुनिए –

का पा ना मा रा ला

बताइए **क**, **प**, **न**, **म**, **र** और **ल** के अतिरिक्त आपको कौन-सी ध्वनि सुनाई दे रही है?

4. अब 'आ' लिखने का प्रयास कीजिए –

आ ....

शिक्षण-संकेत – बच्चों को 'नाना', 'नानी', 'काका', 'काकी', 'मामा', 'मामी' आदि शब्दों की 'न', 'क', 'म' और 'प' ध्वनियों एवं आकृतियों से परिचित कराएँ। 'का', 'पा', 'ना', 'मा' के माध्यम से 'आ' की ध्वनि और आकृति एवं 'आ' की मात्रा (ा) से परिचित कराएँ।

© NCERT not to be republished

5. नीचे दिए गए चित्रों के नाम लिखिए और पढ़ने का प्रयास कीजिए –

.... लू ....

चित्रकारी और लेखन

माँ, पिता, मामा, मामी, नाना, नानी, मित्र, दीदी, भैया आदि का कोई चित्र बनाइए। चित्रों के साथ कुछ शब्द लिखने का प्रयास भी कीजिए –

शिक्षण-संकेत – बच्चों से पूछें कि उन्होंने क्या बनाया है। उनके द्वारा बोले गए वाक्यों को उनके चित्रों के बराबर में लिखें। बच्चों को कुछ शब्द लिखने के लिए प्रोत्साहित करें।

© NCERT not to be republished

शब्दों का खेल

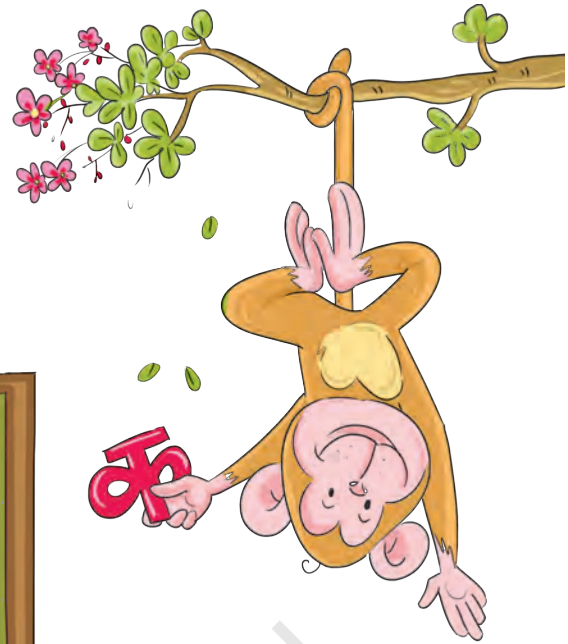

दिए गए अक्षरों को जोड़कर अपने शब्द बनाइए –

क	प	न	र
म	का	पा	ल
ना	मा	दा	ला

(i) ....नाना........ (ii) ....काम........

(iii) .... (iv) ....

(v) .... (vi) ....

(vii) .... (viii) ....

(xi) .... (x) ....

प्रश्न और पहेली

- मेरे पिता के पिता, मेरे ....
- मेरी सहेली बड़ी प्यारी, उसका नाम बूझो तो जानें
  मेरे नाम का उल्टा उसका नाम, मै हूँ नीरा, तो वो है ....
- 'नीना की नानी' का उल्टा है ....

© NCERT not to be republished

चित्र और बातचीत

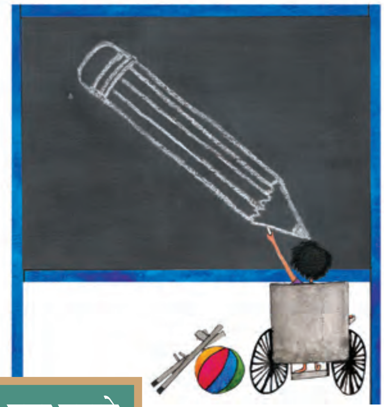

पेंसिल

शिक्षण-संकेत – बच्चों से पूछें कि चित्र में पेंसिल से क्या-क्या बनाया गया है? वे पेंसिल से क्या-क्या बनाते हैं? बच्चों से कहें कि वे पेंसिल से अपनी पसंद का कोई चित्र बनाएँ।

© NCERT not to be republished

रंग भरिए

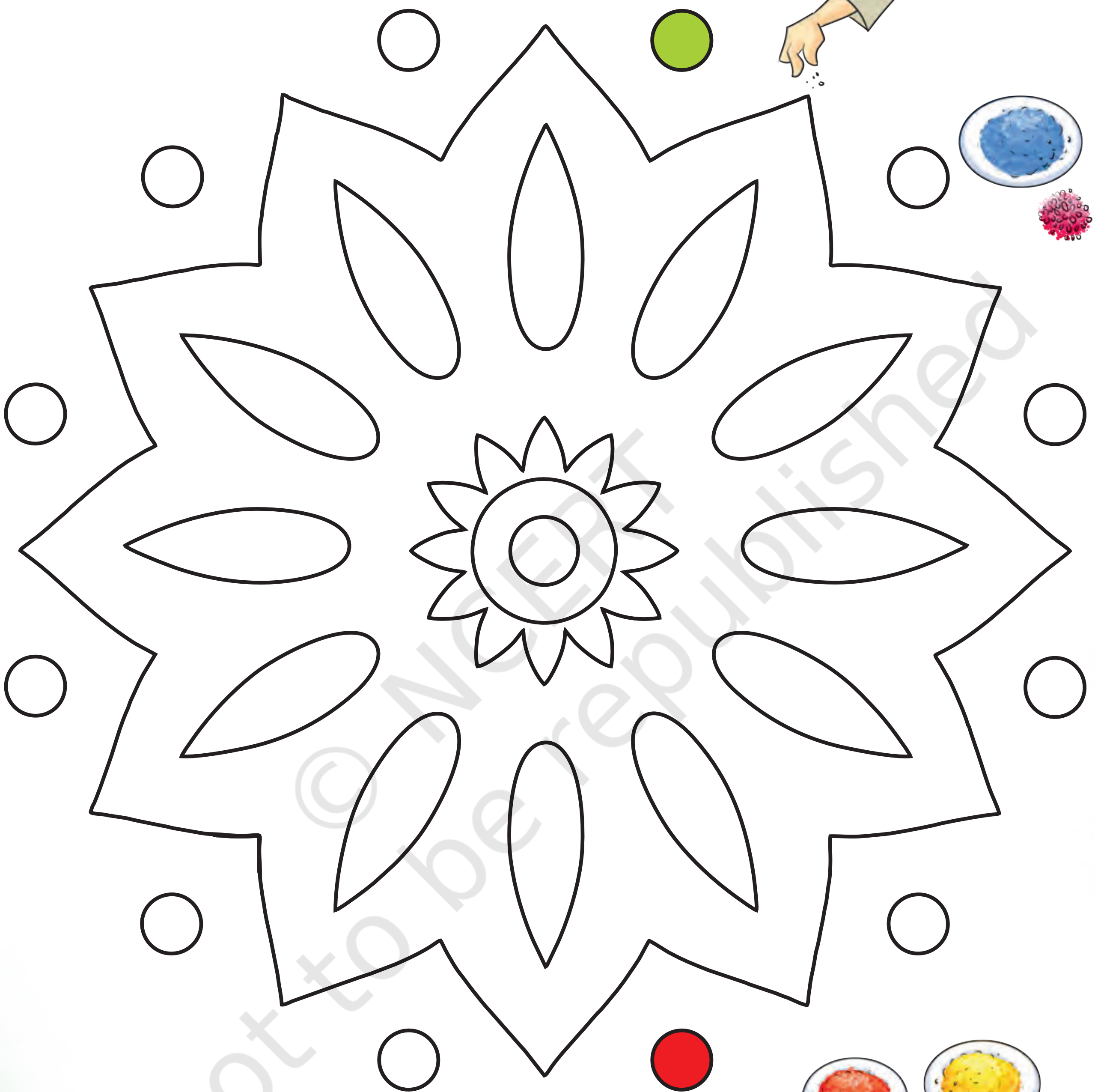

शिक्षण-संकेत – बच्चों को रंगोली में अपने मनपसंद रंग भरने के लिए प्रोत्साहित करें।

© NCERT not to be republished

खेल गीत

मुर्गा बोला कुकड़ू-कूँ

मुर्गा बोला कुकड़ू-कूँ,
चल मेरे भैया रुकता क्यूँ!

कुत्ता भौंके, भौं-भौं-भौं,
अटकी गाड़ी पौं-पौं-पौं।

बकरी आई, बिल्ली आई,
मेंऽ-मेंऽ आई, म्याऊँ-म्याऊँ आई।

धक्की गाड़ी धौं-धौं-धौं,
चल दी गाड़ी पौं-पौं-पौं।

© NCERT not to be republished

शिक्षण-संकेत – अन्य जानवरों की आवाज़ें बताकर इस खेल गीत को आगे बढ़ाइए। बच्चों को खेल के मैदान में एक-दूसरे के पीछे रेलगाड़ी बनाकर आगे बढ़ते हुए यह खेल गीत करवाएँ।

चित्र और बातचीत

गिलहरी की कहानी

© NCERT not to be republished

शिक्षण-संकेत – बच्चों से चित्र के आधार पर अपनी कहानी बनाने के लिए कहें। बच्चों को प्रेरित करें कि वे चित्र में दी गई चिड़िया और इल्ली को भी कहानी में शामिल करें। बच्चों को अपनी भाषा में कहानी सुनाने के लिए प्रोत्साहित करें।

© NCERT not to be republished

5

मिलकर पढ़िए

मिठाई

एक दिन गधे का मन मिठाई खाने का हुआ।

गधे ने अपने मित्रों से कुछ मीठा खाने को माँगा।

भालू ने कहा, "शहद खा लो।"

गधे ने मना कर दिया।

खरगोश ने कहा, "गाजर खा लो।"

गधे ने मना कर दिया।

चींटे ने कहा, "गुड़ खा लो।"

गधे ने मना कर दिया।

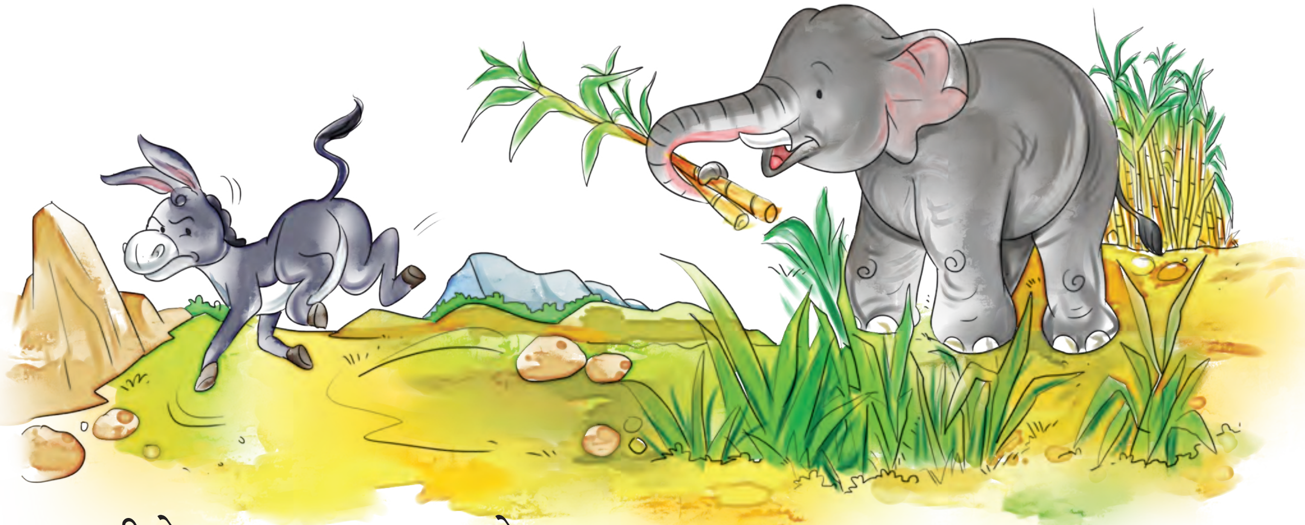

हाथी ने कहा, “गन्ना खा लो।”
गधे ने मना कर दिया।

गिलहरी ने कहा, “आम खा लो।”
गधे ने मना कर दिया।

बिल्ली बोली, “हलवाई की दुकान पर चलो।” गधे को यह बात पसंद आ गई।

© NCERT not to be republished

तब सब साथ-साथ मिठाई खाने के लिए चल पड़े।

साभार – बरखा क्रमिक पुस्तकमाला,
एन.सी.ई.आर.टी.

1. किसे खाने में क्या पसंद है? रेखा खींचकर मिलाइए –

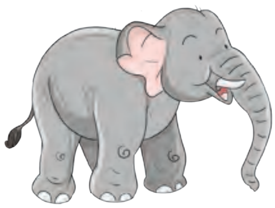

2. नीचे दी हुई वस्तुओं को पहचानकर उनके नाम बताइए और पढ़ने का प्रयास कीजिए –

गधा

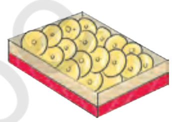

मिठाई

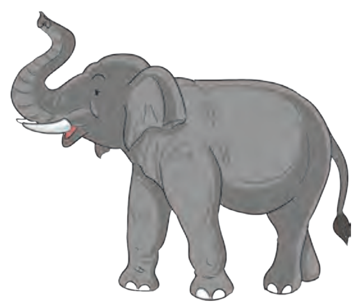

हाथी

3. इस कहानी में कौन-कौन से जानवर हैं? किन्हीं तीन जानवरों के नाम लिखिए –

....

शिक्षण-संकेत – 'मिठाई' कहानी में आए हुए शब्दों एवं अन्य शब्दों की सहायता से बच्चों को 'ग', 'ह', 'ठ', 'ध' की ध्वनि और आकृति की पहचान कराएँ।

© NCERT not to be republished

3. सही या गलत? वाक्यों के सामने ✓ का चिह्न लगाकर बताइए –

(i) गधे ने बिल्ली की बात मान ली। सही / गलत

(ii) खरगोश ने आम खाने को कहा। सही / गलत

(iii) हाथी ने कुछ नहीं कहा। सही / गलत

(iv) सभी ने गधे की सहायता करने का प्रयत्न किया। सही / गलत

शब्दों का खेल

नीचे दी गई कविताओं को पढ़िए –

ईख खेत में बोली,
अपने पास वाली ईख से;
मेरे ऊपर क्यों गिरती हो,
खड़ी रहो ना ठीक से!

– प्रभात

इमली की डाल पर,
बैठी थी चिड़िया;
खा रही थी इमली,
देख रही थी मुनिया।

खोजें-जानें

अपने घर के आस-पास अपने परिवार के लोगों के साथ घूमिए। छोटे-छोटे कीड़ों, मकोड़ों, जानवरों को देखिए। वे क्या करते हैं, क्या खाते हैं, कितने अलग-अलग रंग के हैं आदि विशेषताओं पर ध्यान दीजिए। घर आकर इनके चित्र बनाइए और कुछ शब्द भी लिखना चाहें, तो अवश्य लिखिए। अगले दिन कक्षा में सभी के साथ साझा कीजिए।

शिक्षण-संकेत – बच्चों से कहानी और कविताओं में आए शब्दों— 'मिठाई', 'ईख', 'इमली', 'गिलहरी', 'बिल्ली', 'चींटा', 'मीठा' आदि की सहायता से 'इ' और 'ई' की ध्वनियों और आकृतियों एवं उनकी मात्राओं (ि) एवं (ी) की पहचान करवाएँ।

© NCERT not to be republished

6

मिलकर पढ़िए

तीन साथी

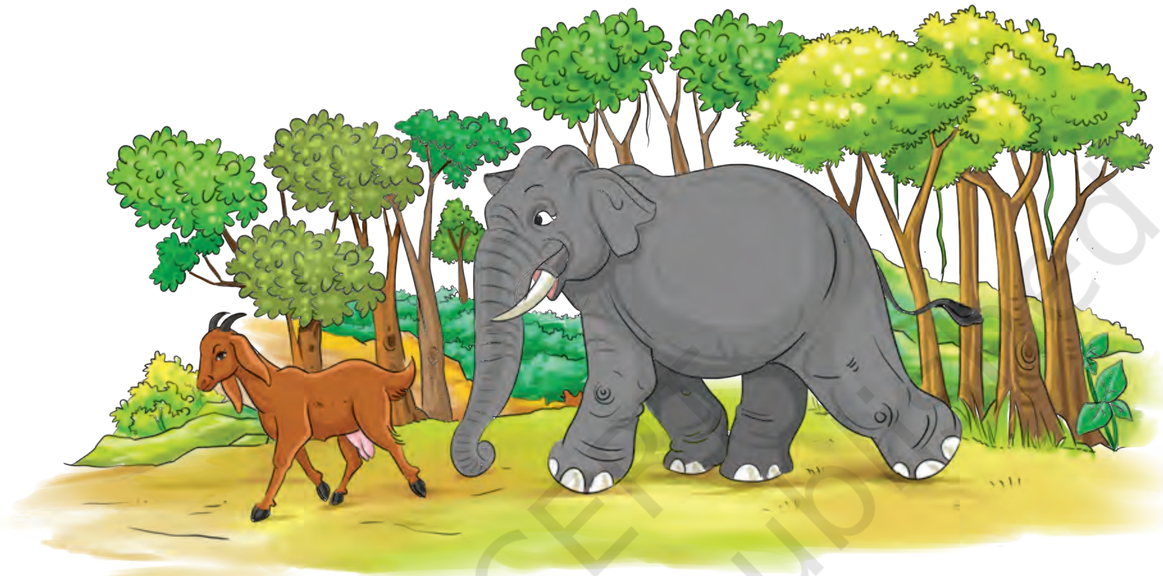

एक था हाथी। एक थी बकरी। दोनों साथ-साथ जंगल में जाते।

हाथी डाली झुकाता और बकरी पत्ते खाती। एक दिन दोनों जंगल में गए।

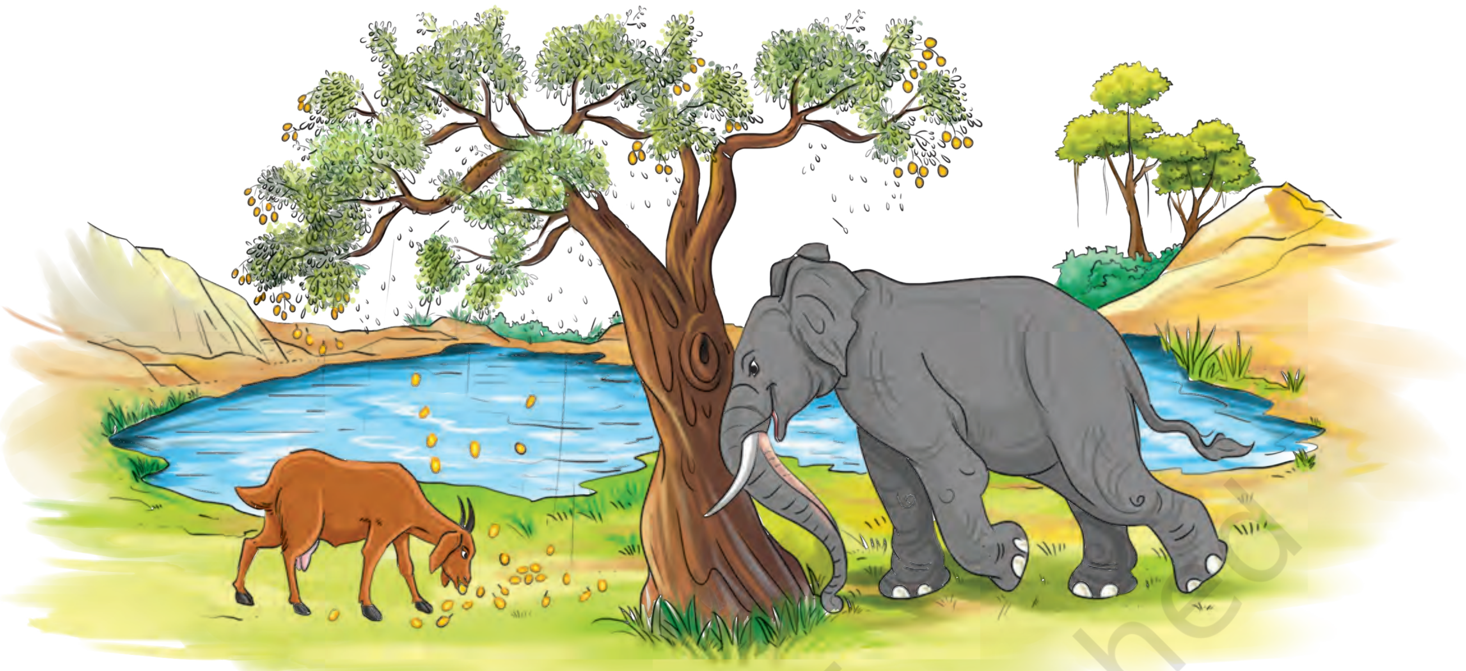

वहाँ एक तालाब दिखाई दिया। वहाँ एक बेर का पेड़ था। हाथी ने पेड़ हिलाया। बकरी बेर खाने लगी।

तभी पेड़ से चिड़िया का बच्चा पानी में गिरा। बकरी उसे बचाने गई तो वह भी डूबने लगी।

© NCERT not to be republished

हाथी ने दोनों को बाहर निकाला। कुछ दिनों में चिड़िया का बच्चा बड़ा हो गया।

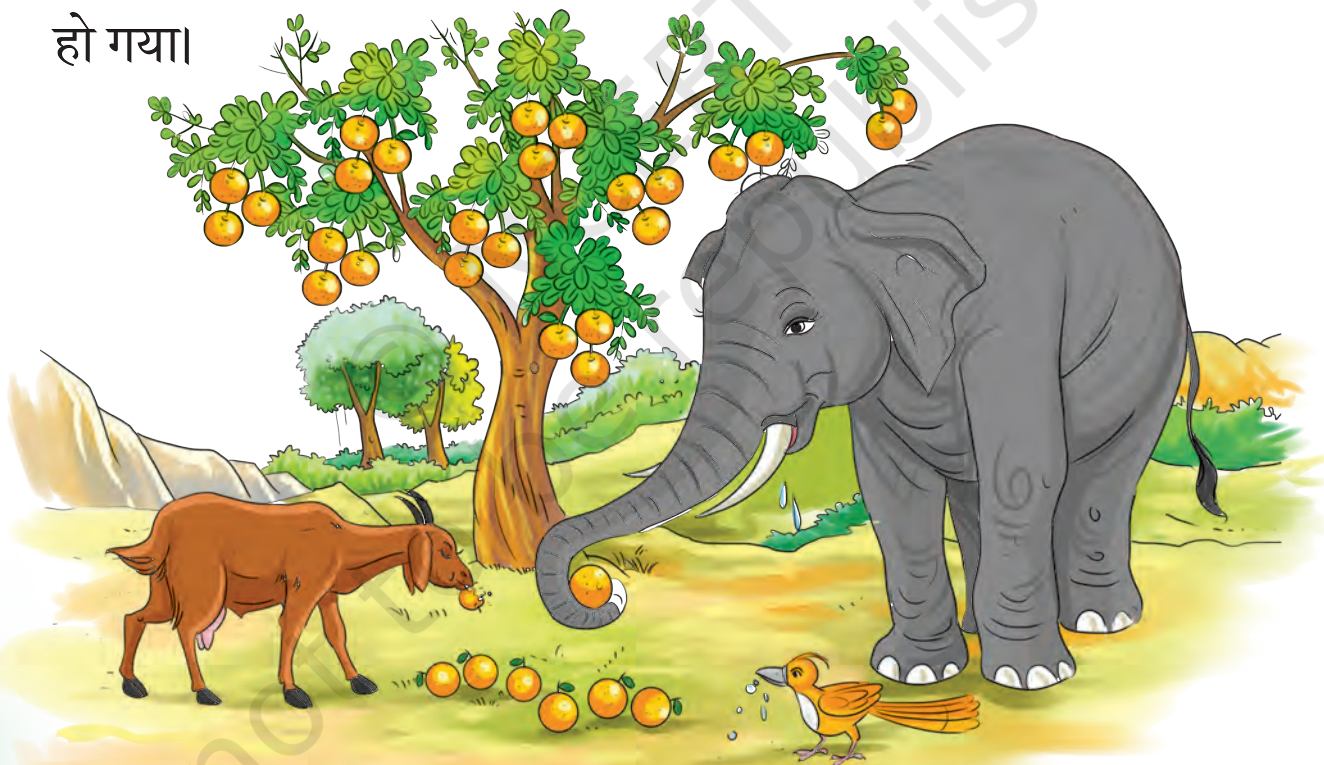

चिड़िया पता लगाती कि कहाँ-कहाँ फल लगे हैं। तीनों वहाँ जाते और खूब फल खाते। अब तीन साथी साथ रहते।

साभार – एकलव्य

बातचीत के लिए

1. तालाब के पास किसका पेड़ था?
2. हाथी ने बेर का पेड़ क्यों हिलाया?
3. किसी ऐसी घटना के विषय में बताइए जब आपने किसी की सहायता की हो।

क्या होता अगर...

1. चिड़िया का बच्चा तालाब में न गिरता।
2. हाथी तालाब के पास न होता।

चित्र में कितने हाथी?

कहाँ छुपे हैं सारे हाथी, आओ खोजें मिलकर साथी।

© NCERT not to be republished

पहले क्या हुआ?

कहानी में जो-जो हुआ, उन्हें क्रम से अंक दीजिए –

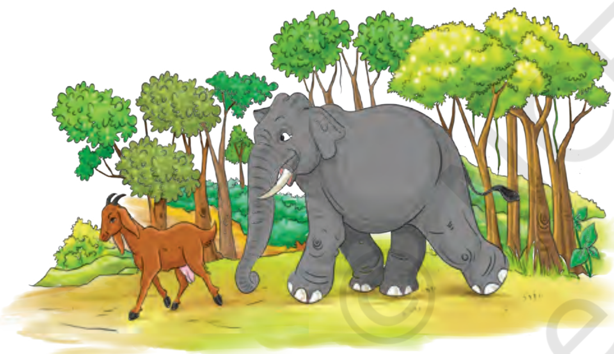

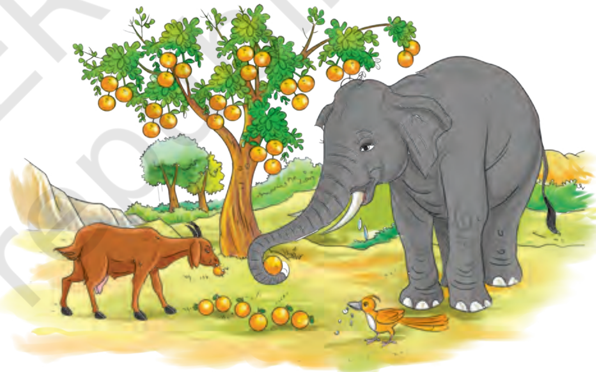

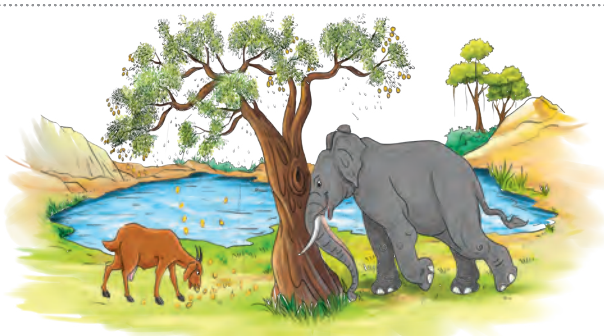

शब्दों का खेल

1. कहानी में आए तीन साथियों के नाम बताइए।
2. अपने शिक्षक की सहायता से शब्द पढ़िए और बताइए कि इनमें कौन-कौन सी ध्वनियाँ हैं –

बकरी

चिड़िया

हाथी

3. नीचे दिए गए शब्दों में 'ई' की मात्रा (ी) लगाइए और पढ़ने का प्रयास कीजिए –

बकर......

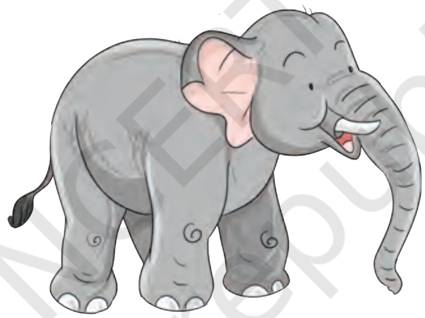
हाथ......

चींट......

4. नीचे दिए गए शब्दों में 'इ' की मात्रा (ि) लगाइए और पढ़ने का प्रयास कीजिए –

......ततली

......गलहरी

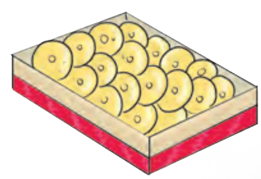
......मठाई

शिक्षण-संकेत – 'मिठाई' और 'तीन साथी' कहानी में आए शब्दों एवं अन्य शब्दों की सहायता से 'ब', 'च', 'थ' ध्वनियों और उनकी आकृतियों की पहचान करवाएँ। मात्राएँ लिखने में बच्चों की सहायता करें।

© NCERT not to be republished

चित्र और बातचीत

मछली

शिक्षण-संकेत – बच्चों को चित्र में दी गई चीज़ों की पहचान करने और उनके बारे में बात करने का पर्याप्त समय एवं अवसर दें। अंदर-बाहर, छोटा-बड़ा आदि पूर्व-संख्या अवधारणाओं का अभ्यास कराएँ।

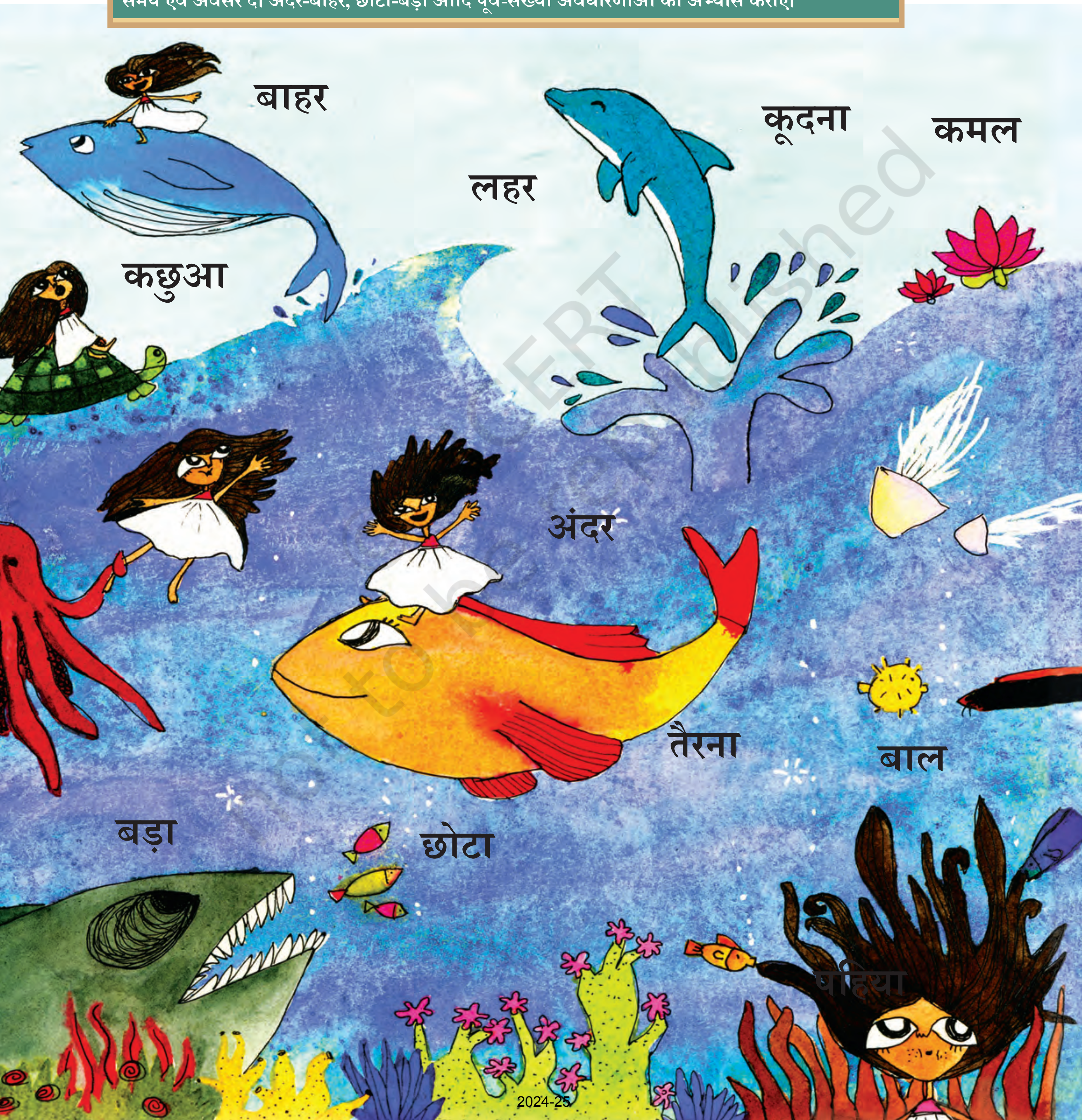

© NCERT not to be republished

झटपट कहिए

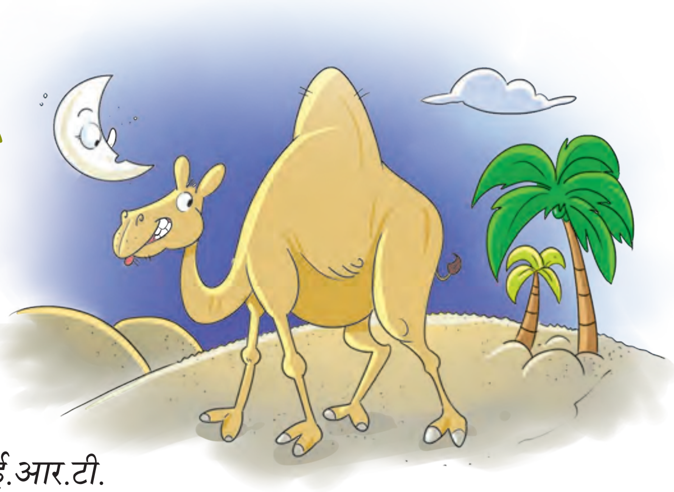

कुछ ऊँट ऊँचा,
कुछ पूँछ ऊँची;
कुछ ऊँचे ऊँट की,
पीठ ऊँची।

साभार – रिमझिम-2, एन.सी.ई.आर.टी.

आप भी अपने घर में परिवार के लोगों से ऐसी ही झटपट कविता के विषय में जानिए और मित्रों के साथ मिलकर झटपट बोलिए।

आओ कुछ बनाएँ

अंगूठे की छाप से आप भी अपनी पसंद के चित्र बनाइए और उनके नाम लिखिए –

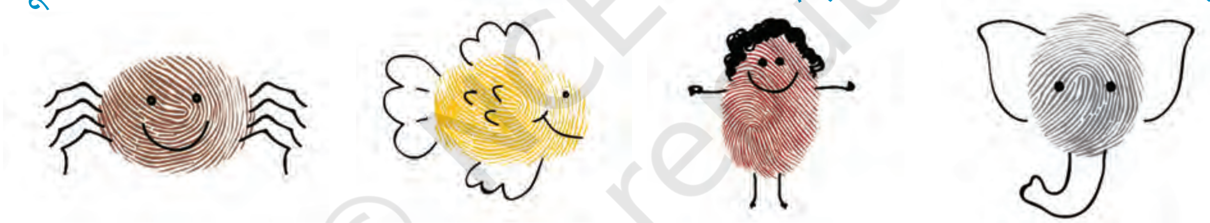

© NCERT not to be republished

दिए गए चित्रों को पूरा कीजिए और नाम लिखिए –

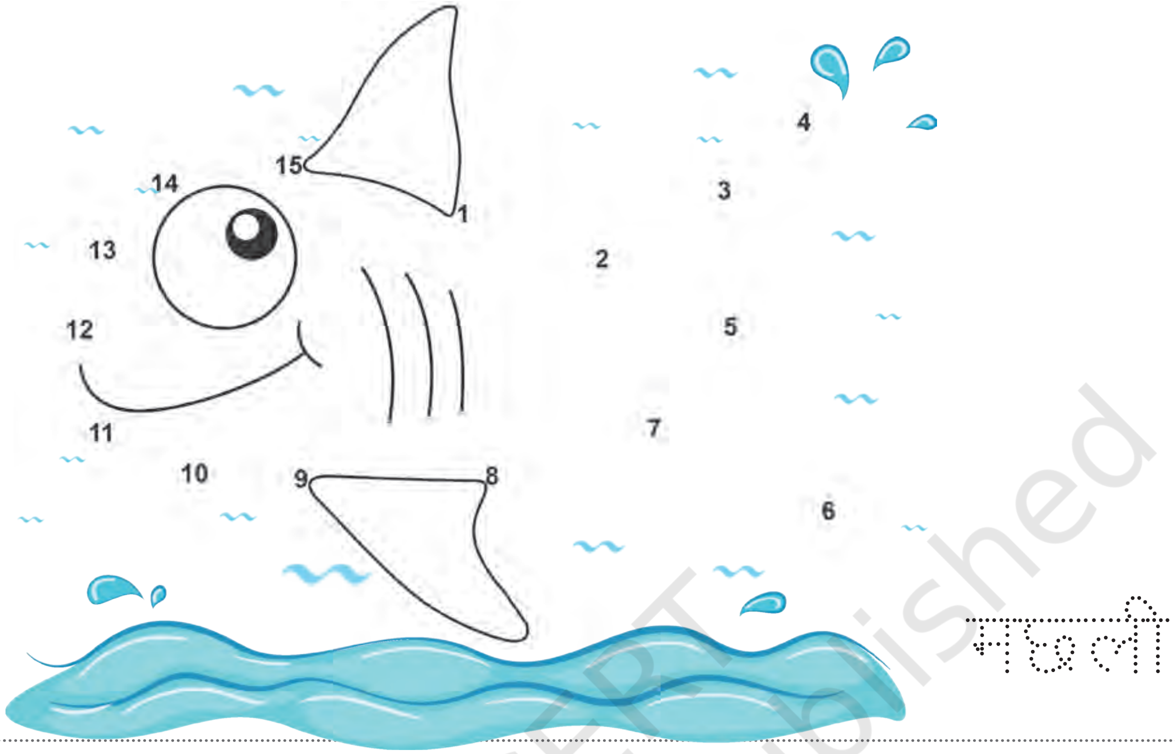

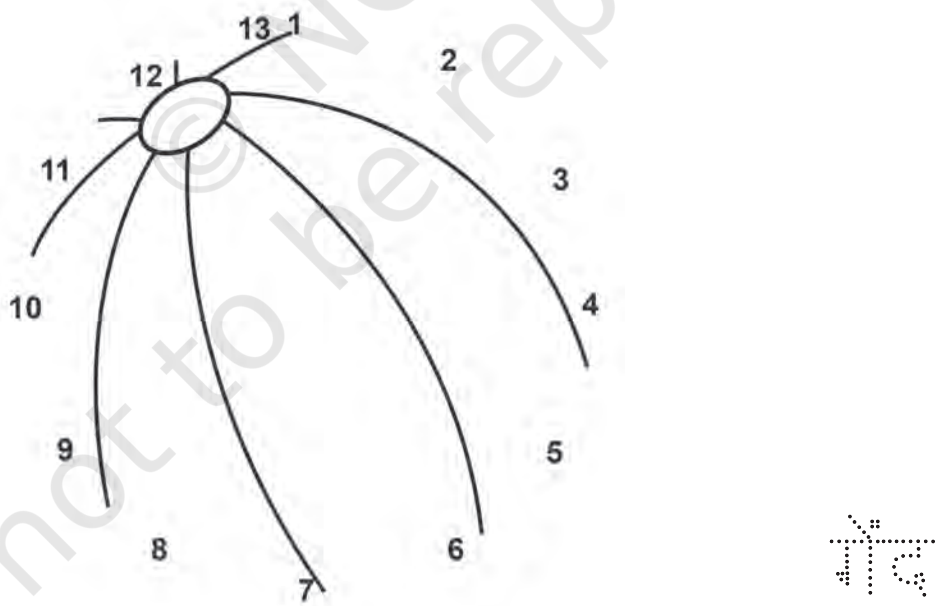

© NCERT not to be republished

7

आनंदमयी कविता

वाह, मेरे घोड़े!

एक कदम, दो कदम, तीन कदम ताल,
वाह, मेरे घोड़े क्या तेरी चाल!

एक कदम, दो कदम, तीन कदम ताल,
भाग मेरे घोड़े, चल नैनीताल!

© NCERT not to be republished

एक कदम, दो कदम, तीन कदम ताल,
ले मेरे घोड़े चने की दाल!

एक कदम, दो कदम, तीन कदम ताल,
खाकर दिखा फिर अपना कमाल!

– *रमेश तैलंग*

© NCERT not to be republished

शब्दों का खेल

1. नीचे दिए गए शब्दों को ध्यान से सुनिए। इन शब्दों की पहली और अंतिम ध्वनि पहचानिए –

ताल   चाल   दाल   कमाल

ऐसे शब्द लिखिए जिनकी अंतिम ध्वनि इन शब्दों (ताल, चाल, दाल, कमाल) जैसी हो –

....

2. ‘त’, ‘घ’ ‘ड़’ की ध्वनि वाले शब्दों को पहचानिए और लिखिए –

घोड़ा   ताला   पेड़   डाल   दाल
तोता   घर   धागा   सड़क

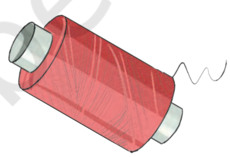

....

....

शिक्षण-संकेत – कविता में आए हुए शब्दों एवं अन्य शब्दों की सहायता से बच्चों को ‘त’, ‘घ’, ‘ड़’ ध्वनियों और उनकी आकृतियों से परिचित कराएँ।

© NCERT not to be republished

८

सुनें कहानी

खतरे में साँप

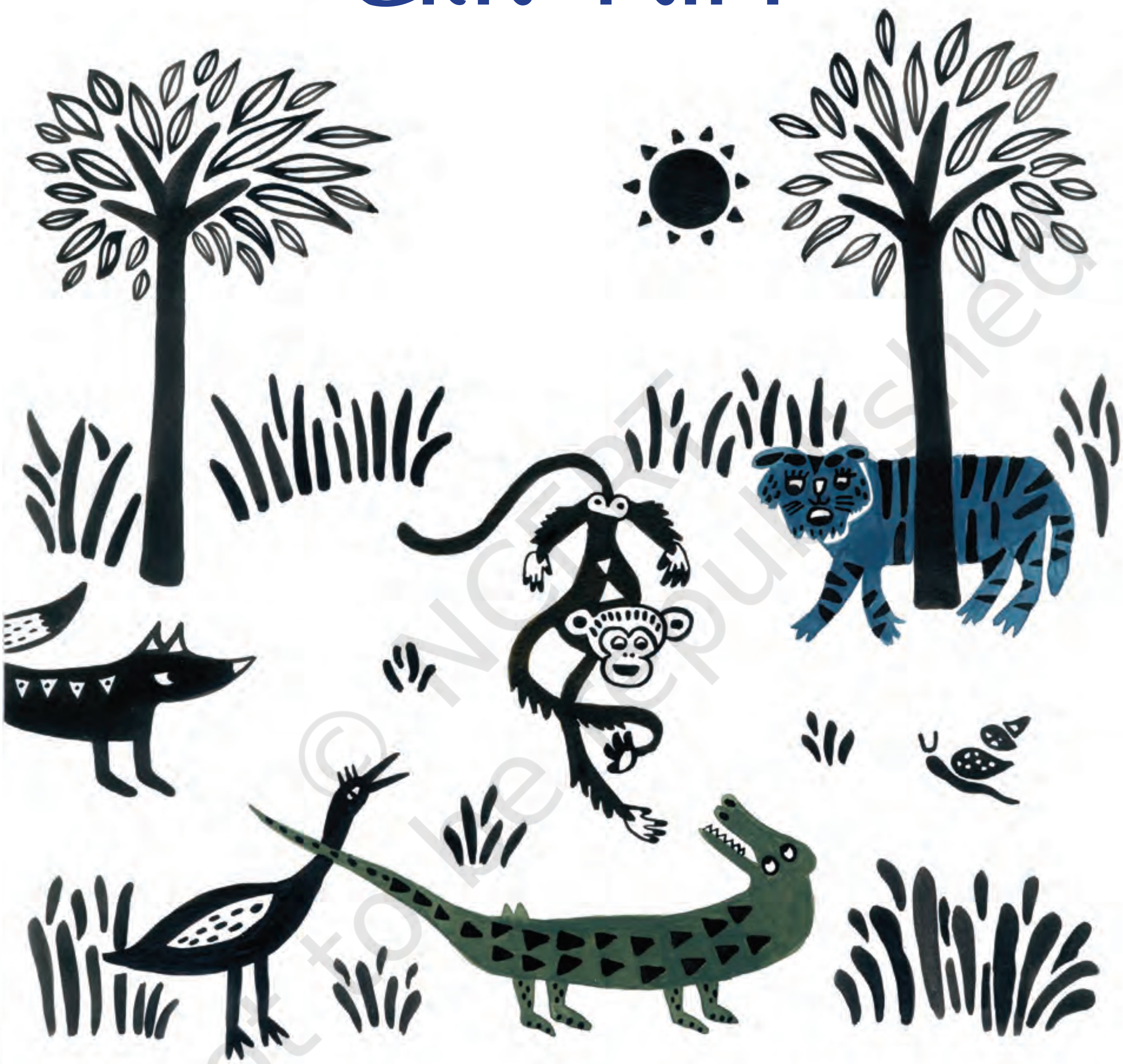

सारे जानवर इकट्ठे हुए थे। बात चल रही थी कि खतरे में अपनी जान कैसे बचाएँ? देर तक बहस चली। अंत में सबको बंदर की सलाह ठीक लगी। बंदर की सलाह थी कि खतरे के समय 'सिर पर पैर रखकर भागना' सबसे अच्छा है।

बातचीत समाप्त हुई और सारे जानवर अपने-अपने ठिकाने चले गए। सिर्फ़ साँप एक-दूसरे का मुँह ताकते देर तक वहीं बैठे रहे।

– चंदन यादव

बातचीत के लिए

1. साँप वहीं क्यों बैठे रह गए?
2. आप साँप को क्या सलाह देंगे?
3. 'सिर पर पैर रखकर भागने' का क्या अर्थ है?

रंग भरिए

बिना रंग-भरे चित्र में दिए गए चित्र जैसा रंग भरिए –

शिक्षण-संकेत – बच्चों के साथ 'सिर पर पैर रखकर भागना' मुहावरे के अर्थ के विषय में चर्चा करें। बच्चों से पूछें कि क्या वे कभी सिर पर पैर रखकर भागे हैं? क्यों और कब? कौन-कौन से कीड़े हैं, जो साँप की तरह वहीं बैठे रहेंगे?

© NCERT not to be republished

चित्र और बातचीत

जंगल

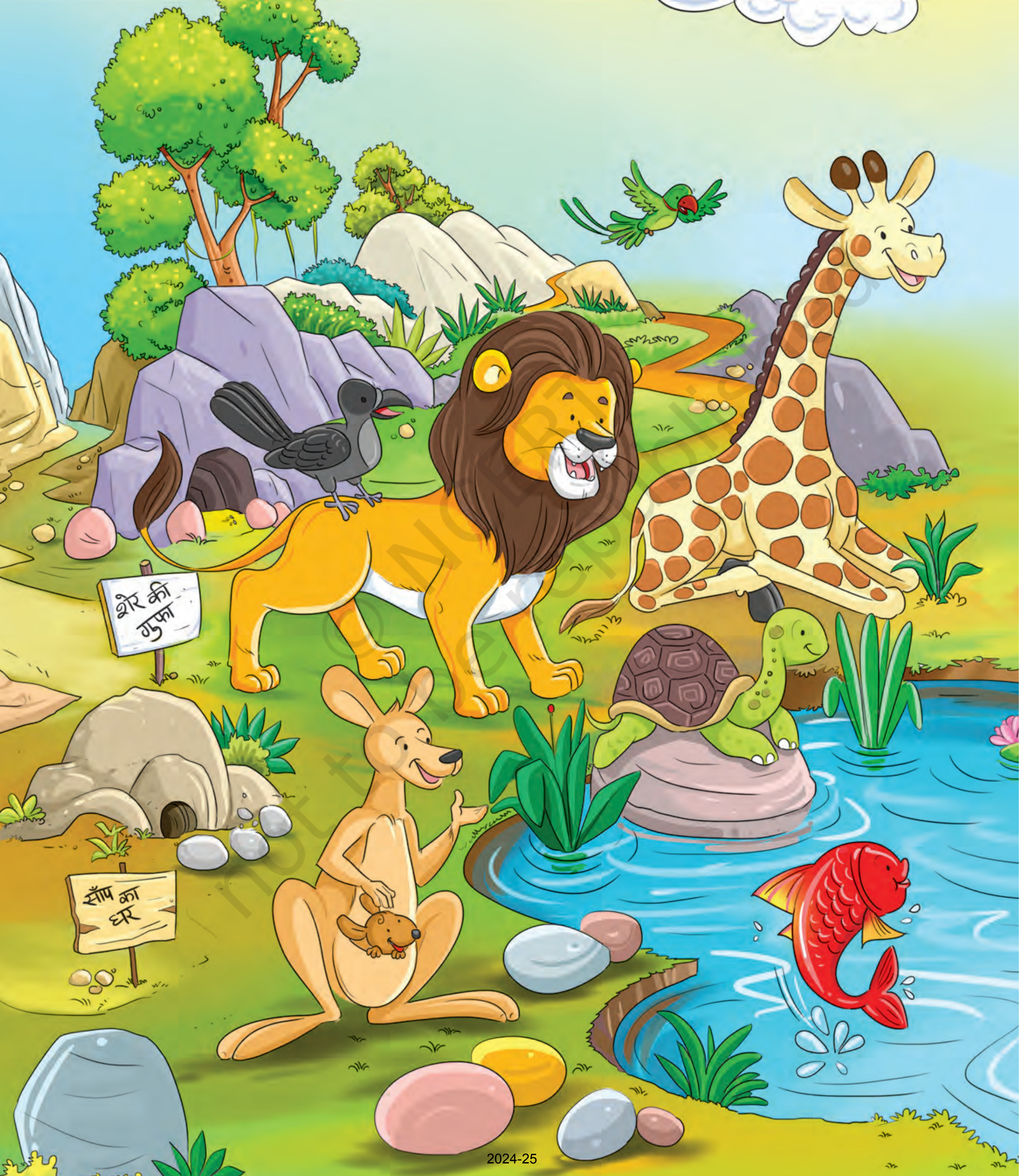

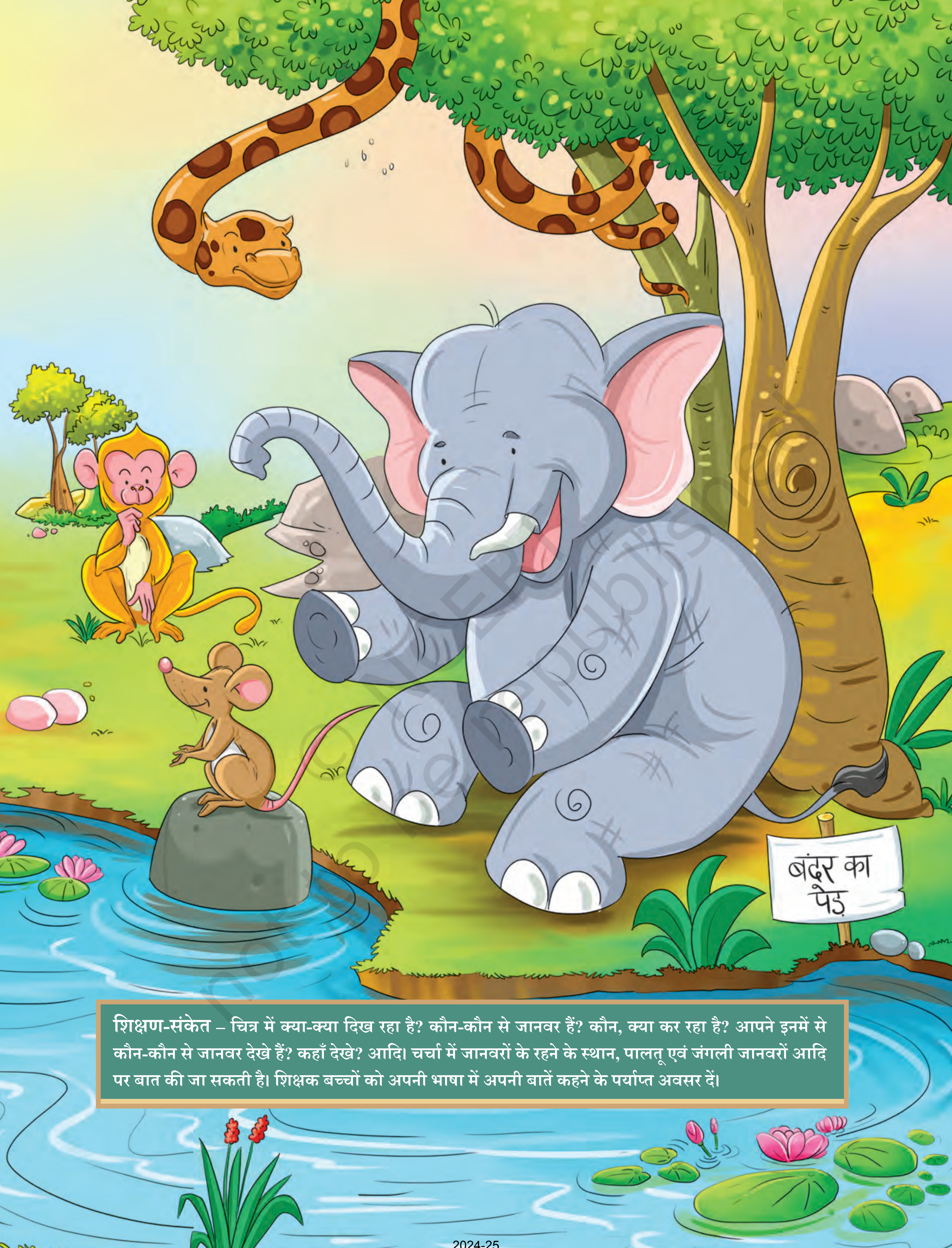

शिक्षण-संकेत – चित्र में क्या-क्या दिख रहा है? कौन-कौन से जानवर हैं? कौन, क्या कर रहा है? आपने इनमें से कौन-कौन से जानवर देखे हैं? कहाँ देखे? आदि। चर्चा में जानवरों के रहने के स्थान, पालतू एवं जंगली जानवरों आदि पर बात की जा सकती है। शिक्षक बच्चों को अपनी भाषा में अपनी बातें कहने के पर्याप्त अवसर दें।

आनंदमयी कविता

कबरी झबरी बकरी

बकरी कबरी, बकरी झबरी
कबरी झबरी बकरी;
आगे निकली कबरी बकरी,
पीछे रह गई झबरी।
आगे-आगे कबरी बकरी,
पीछ-पीछे झबरी;
साथ चली थीं,
हो गईं आगे-पीछे
कबरी झबरी बकरी

– प्रभात

शिक्षण-संकेत – बच्चों के साथ कबरी और झबरी बकरियों के रूप-रंग के बारे में बातचीत कीजिए। 'झबरा', 'कबरा', 'बकरा' आदि शब्दों से तुकबंदी करते हुए बच्चों से नई कविता की रचना करवाएँ।

© NCERT not to be republished

आओ कुछ बनाएँ

शिक्षक द्वारा दिए गए निर्देशों को ध्यान से सुनिए और बनाइए –

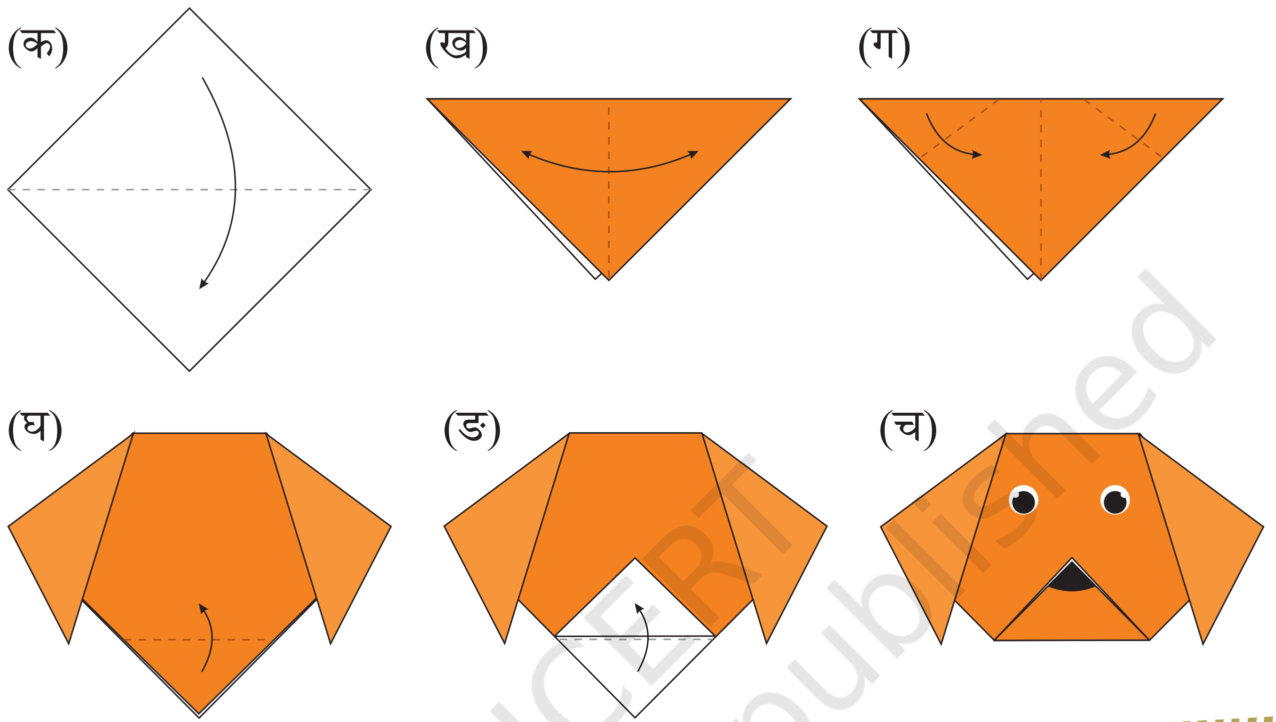

1. एक चौकोर कागज़ लें और उसे चित्र में दिखाए अनुसार टूटी रेखा पर मोड़ें।
2. आपको एक तिकोना कागज़ मिलेगा, उसे चित्र के अनुसार टूटी रेखा पर दो छोटे तिकोनों में मोड़ें, इससे दो कान जैसे बन जाएँगे।
3. नीचे वाले तिकोने को ऊपर की ओर थोड़ा-सा मोड़ लें, इससे कुत्ते का मुँह बनेगा।
4. इस कुत्ते के चेहरे पर कलम या रंग से आँखें और मुँह बना दें। कुत्ते का चेहरा तैयार है!

शिक्षण-संकेत – शिक्षक एक-एक करके बच्चों को निर्देश दें। इस बात का ध्यान रखें कि बच्चे अपनी गति से काम करेंगे। बच्चों को अपनी गति से काम करने की स्वतंत्रता प्रदान करें।

© NCERT not to be republished

शब्दों का खेल

आओ 'र' पहचानें

देखिए और बोलिए 'र' से क्या-क्या शब्द हैं –

यहाँ कुछ शब्द दिए जा रहे हैं, इनमें से 'र' को खोजिए और घेरा लगाइए –

गिलहरी   बकरी   रिमझिम   गिरगिट   खरगोश

दिए गए अक्षरों को जोड़कर अपने शब्द बनाइए –

घ	ड़ा	हा	ता
दी	ला	थी	ली
मि	ठा	ई	दी
गा	ड़ी	धा	ना

© NCERT not to be republished

कहानी सुनाइए

नीचे कुछ शब्द और चित्र दिए गए हैं। इनकी सहायता से कोई कहानी बनाइए और कक्षा में सुनाइए –

खरगोश

भालू

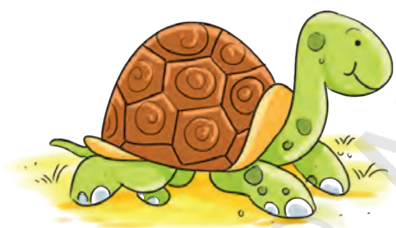

कछुआ

चिड़िया

बंदर

दौड़ना

© NCERT not to be republished

९

सुनें कहानी

आलू की सड़क

एक भालू था। उसे नानी के घर दूर जाना था। रास्ते में खाने के लिए भालू ने बोरा-भर आलू पीठ पर रख लिए।

पर बोरे में तो छेद था।
भालू आगे बढ़ता
जाता— धप्प, धप्प, धप्प।
बोरे से आलू टपकते
जाते— टप्प, टप्प, टप्प।

रास्ते में पीपल के पेड़ पर एक बंदर बैठा था।
उसने भालू से पूछा,
"कहाँ जा रहे हो, भैया"?
लेकिन उत्तर में बंदर ने बस धप्प, टप्प,
धप्प, टप्प, धप्प, टप्प ही सुना।

उसने पेड़ से नीचे देखा। रास्ते में आलू पड़े हुए थे।
यह देखकर बंदर मन-ही-मन बोला– भालू चाहे
न बताए, पर मैं पता लगा सकता हूँ।
वह खुश होकर पेड़ से नीचे उतरा।

– चंदन यादव

शिक्षण-संकेत – बच्चों को इस कहानी को अपनी भाषा में सुनाने के लिए प्रोत्साहित करें। बच्चे 'भालू', 'बंदर', 'नानी' आदि से जुड़ी अन्य कहानी या कविता भी सुना सकते हैं।

© NCERT not to be republished

बातचीत के लिए

1. बंदर ने कैसे पता लगाया होगा कि भालू कहाँ जा रहा है?
2. भालू ने बंदर को कोई उत्तर क्यों नहीं दिया होगा?
3. यदि रास्ते में पानी होता, तब धप्प की जगह क्या आवाज़ आती?
4. अगर बोरे में छेद नहीं होता, तो कहानी में आगे क्या होता? अपनी कहानी सुनाइए।

आवाज़ें तरह-तरह की

हमें आस-पास कई प्रकार की आवाज़ें सुनाई देती हैं,

जैसे –
- घंटी बजने पर 'टन-टन'
- बादल गरजने पर 'घड़-घड़'
- पानी टपकने पर 'टप-टप'

बताइए, इन वस्तुओं की आवाज़ें कैसी होती हैं –

- पानी में चलना

- सूखे पत्तों पर चलना

- गुब्बारा फूटना

- बर्तनों का गिरना

- बारिश की बूँदों का गिरना

- माँ का पुकारना

शिक्षण-संकेत – बच्चे जो भी उत्तर दें, उन्हें स्वीकार करें। आस-पास की अन्य आवाज़ों के बारे में भी चर्चा करें।

© NCERT not to be republished

सही उत्तर चुनकर लिखिए –

1. बंदर कौन-से पेड़ पर बैठा था? .... (पीपल / बेर)

2. भालू कहाँ जा रहा था? .... (नानी के घर / दादी के घर)

3. भालू ने बोरे में क्या रखा था? .... (आलू / मूली)

नीचे दिए गए चित्रों को वाक्यों के साथ जोड़िए –

भालू ने बोरा-भर आलू पीठ पर रख लिए। •

पीपल के पेड़ पर बंदर बैठा था। •

रास्ते में आलू पड़े हुए थे। •

© NCERT not to be republished

शिक्षण-संकेत – बच्चों को उँगली रखकर वाक्य पढ़कर सुनाएँ। बच्चों को अपनी भाषा में इन बातों और 'भालू', 'बोरा', 'आलू', 'पेड़', 'बंदर', 'पीठ' आदि शब्दों के नाम बताने के लिए प्रोत्साहित करें।

शब्दों का खेल

1. 'ब' से शुरू होने वाले शब्दों को पहचानिए, अनुमान लगाकर पढ़िए और लिखिए –

जलेबी
....

डमरू
....

तारा
....

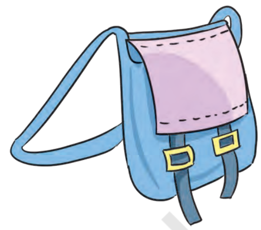
बस्ता
....

2. नीचे दिए गए चित्रों के नाम सुनिए –

उल्लू

कुरता

सुराही

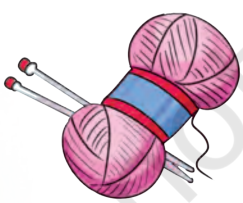
ऊन

फूल

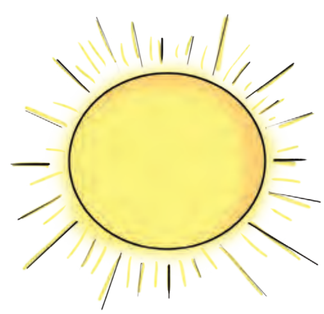
सूरज

बताइए, इन नामों की पहली ध्वनि में क्या अंतर है?

© NCERT not to be republished

3. **नीचे दिए चित्रों के नाम बताइए और लिखिए –**

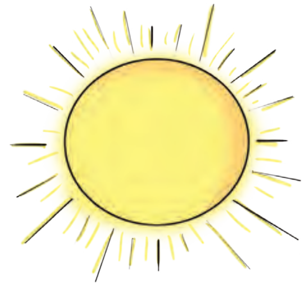

भालू   सड़क   टमाटर   सूरज

4. **'भालू' शब्द में 'भा' और 'लू' अक्षर जुड़े हुए हैं। यदि 'भा' की जगह 'का', 'ला', 'ता', 'बा', 'शा' जोड़ें, तो क्या शब्द बनेगा? इन्हें लिखिए और पढ़कर सुनाइए –**

का .... कालू ....
ला ....
ता ....
बा ....
शा ....

5. **सबसे बड़े पत्ते में हरा रंग भरिए –**

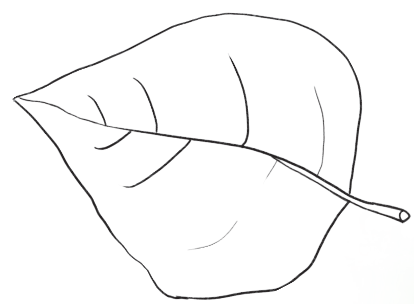

शिक्षण-संकेत – 'उल्लू', 'कुरता', 'बगुला', 'ऊन', 'फूल', 'सूरज', 'उल्टा', 'तरबूज' आदि शब्दों की सहायता से बच्चों को 'उ' और 'ऊ' की ध्वनि, आकृति और इनकी मात्राओं (ु एवं ू) से परिचित कराएँ। 'लू' से बनने वाले अन्य शब्द भी पूछें।

© NCERT not to be republished

10

आनंदमयी कविता

झूलम-झूली

माटी-माटी खेलें,
आओ, पानी-पानी खेलें;
धरती में बीजों को बोएँ,
खेल किसानी खेलें।
छुप्पम-छुप्पी खेलें,
आओ, झूलम-झूली खेलें;
चढ़ें पेड़ पर पकड़म-पकड़ी,
कूदम-कूदी खेलें।

– श्याम सुशील

© NCERT not to be republished

बातचीत के लिए

1. बच्चे क्या-क्या कर रहे हैं?
2. आपको कौन-कौन से खेल पसंद हैं?
3. माटी-माटी खेल कैसे खेला जाता होगा?

शब्दों का खेल

1. शब्दों का दूसरा साथी खोजकर बताइए, लिखिए और पढ़कर सुनाइए –

छुप्पम – ....छुप्पी........ झूलम – ....

पकड़म – .... कूदम – ....

2. नीचे दिए गए शब्दों के नाम सुनिए –

झूला छुप्पम खेल झंडा खेत छतरी

बताइए, इन नामों की पहली ध्वनि में क्या अंतर है?

3. नीचे दिए गए शब्दों को पढ़िए। अब इनमें 'उ' (ु) या 'ऊ'(ू) की मात्रा लगाकर नए शब्द बनाइए और लिखिए –

फल – .... पल – .... परी – .... सराही – ....

शिक्षण-संकेत – 'झूला', 'छुप्पम', 'खेल', 'झंडा', 'खेत', 'छतरी' आदि एवं अन्य शब्दों की सहायता से बच्चों को 'झ', 'छ', 'ख' की ध्वनियों एवं आकृतियों (अक्षरों) से परिचित कराएँ तथा इनसे बनने वाले अन्य शब्द भी पूछें। बच्चों से पूछें कि उनकी भाषा में इन्हें क्या कहते हैं।

© NCERT not to be republished

पढ़िए और मिलाइए

चढ़ें पेड़ पर पकड़म-पकड़ी

आओ झूलम-झूली खेलें

छुपन-छुपाई खेलें

धरती में बीजों को बोएँ

© NCERT not to be republished

खेल-खेल में

कक्षा के अपने साथियों के साथ मिलकर कविता में दिए गए खेल खेलिए। खेल का चित्र बनाकर अपने परिवार के लोगों को बताइए।

झटपट कहिए

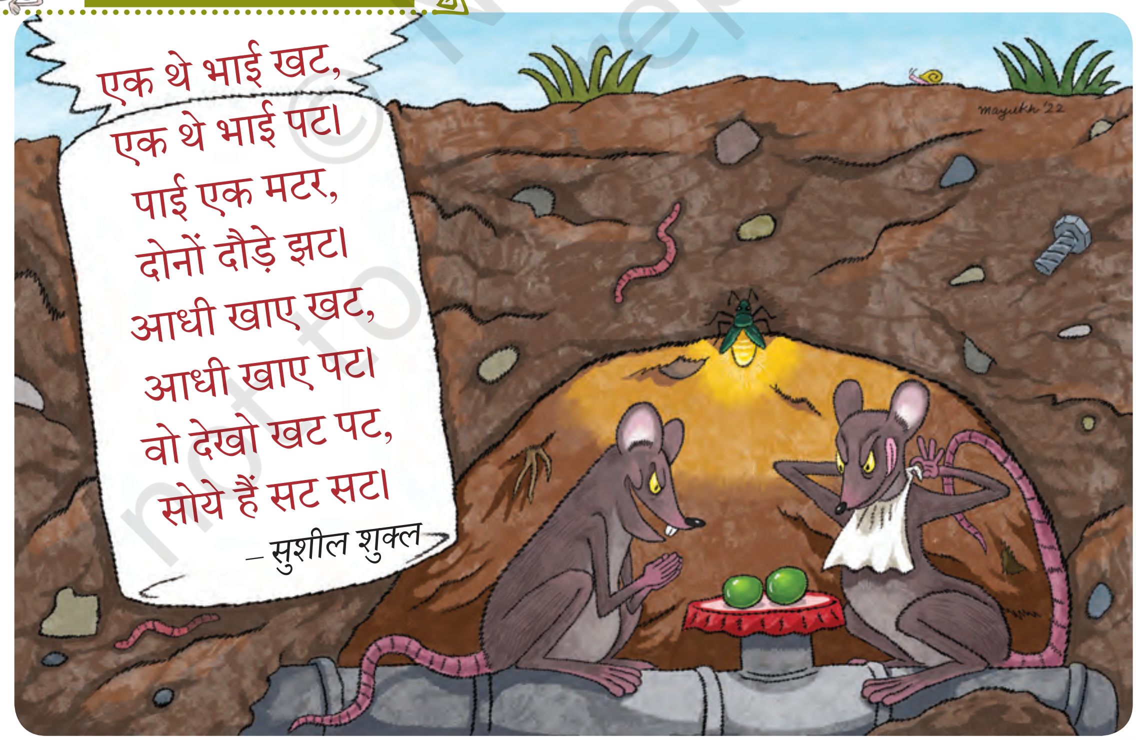

© NCERT not to be republished

मेरा गाँव

© NCERT not to be republished

शिक्षण-संकेत – पोस्टर के विषय में चर्चा करें, जैसे– खेतों में कौन-कौन, क्या-क्या काम कर रहा है? खेत में मचान क्यों बनाई जाती होगी? आदि।

चित्रकारी

हमारी थाली तक रोटी कैसे पहुँचती है? चर्चा कीजिए और फिर इसे चित्रों द्वारा दिखाने का प्रयास कीजिए। चित्र बनाने के साथ-साथ कुछ शब्द भी लिखिए –

© NCERT not to be republished

11

मिलकर पढ़िए

भुट्टे

नीना के नाना बाज़ार गए। नाना खूब सारे भुट्टे लाए।

नाना ने नीना के लिए भुट्टे भूने।

नीना ने जी भरकर भुट्टे खाए।

2024-25

नीना की नानी ने भुट्टे उबाले।

नाना और नानी ने जी भरकर भुट्टे खाए।

नीना ने फिर क्या किया?
आगे की कहानी बनाइए और
अपनी भाषा में सुनाइए।

शिक्षण-संकेत – बच्चों के साथ कहानी पर चर्चा करें, जैसे– नानीजी ने भुट्टे क्यों उबाले होंगे? नानाजी के थैलों में कितने भुट्टे होंगे? भुट्टे भूनते समय नीना क्या देख रही होगी? अगर कहानी में नीना का भाई और बहन भी होते, तो क्या होता आदि? बच्चों से कहें कि वे कहानी में भुट्टे की जगह मटर रखकर अपनी कहानी बनाएँ और कक्षा में सुनाएँ।

© NCERT not to be republished

प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

1. इस कहानी में कौन-कौन है? ....
2. नीना के नाना बाज़ार से क्या लाए? ....
3. तालिका में दी गई बातों के विषय में बताइए और कुछ वस्तुओं के नाम लिखने का प्रयास कीजिए –

आप किन-किन वस्तुओं को भूनकर खाते हैं?	आप किन-किन वस्तुओं को उबालकर खाते हैं?

कौन-कौन सी वस्तुएँ तलकर खाई जाती हैं?	कौन-कौन सी वस्तुएँ कच्ची खाई जाती हैं?

नीचे दिए गए शब्दों में 'उ'(ु) या 'ऊ'(ू) की मात्रा लगाकर सही शब्द लिखिए –

गेहँ

भाल

कल्फ़ी

दध

आल

भट्टा

© NCERT not to be republished

12

सुनें कहानी

फूली रोटी

जमाल की माँ रसोई में खाना बना रही थीं। जमाल माँ को देख रहा था। जमाल का मित्र जय बर्तनों के साथ खेल रहा था।

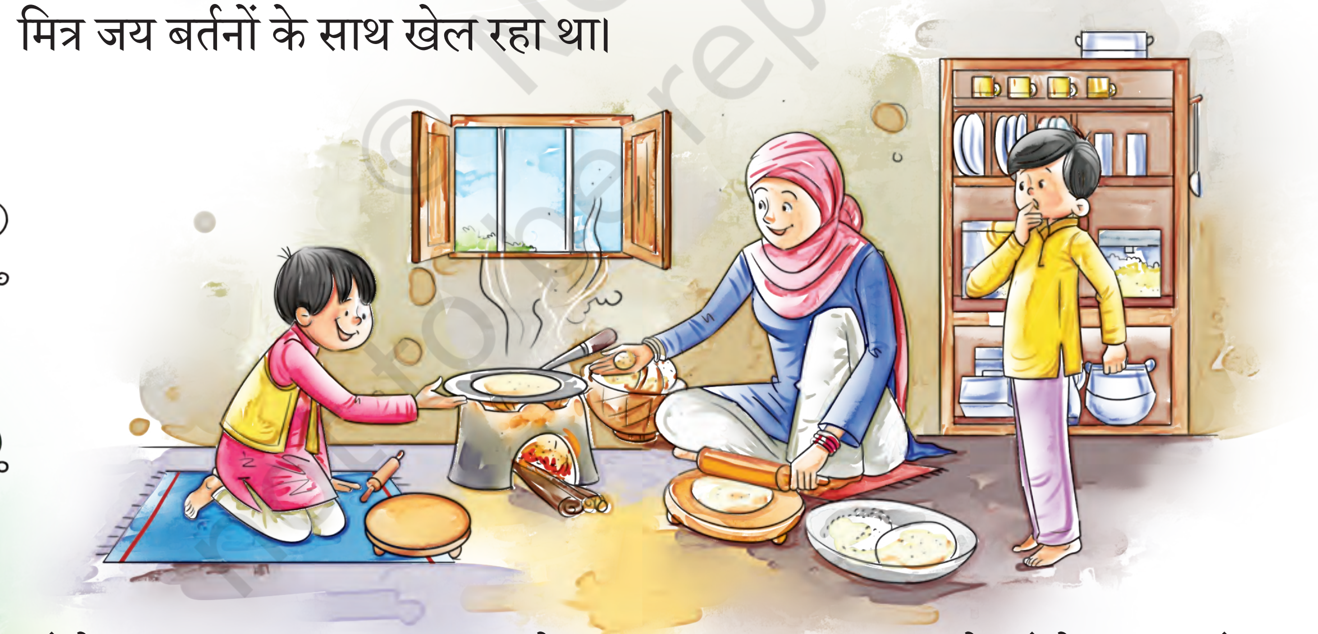

माँ रोटी बना रही थीं। जमाल भी रोटी बनाना चाहता था। उसने माँ से आटा माँगा। माँ ने उसे छोटी-सी लोई दे दी।

© NCERT not to be republished

जमाल रोटी बेलने लगा। उसने रोटी पर सूखा आटा लगाया। जमाल से रोटी गोल नहीं बन रही थी। रोटी गोल करने के लिए जय ने जमाल को कटोरी दी।

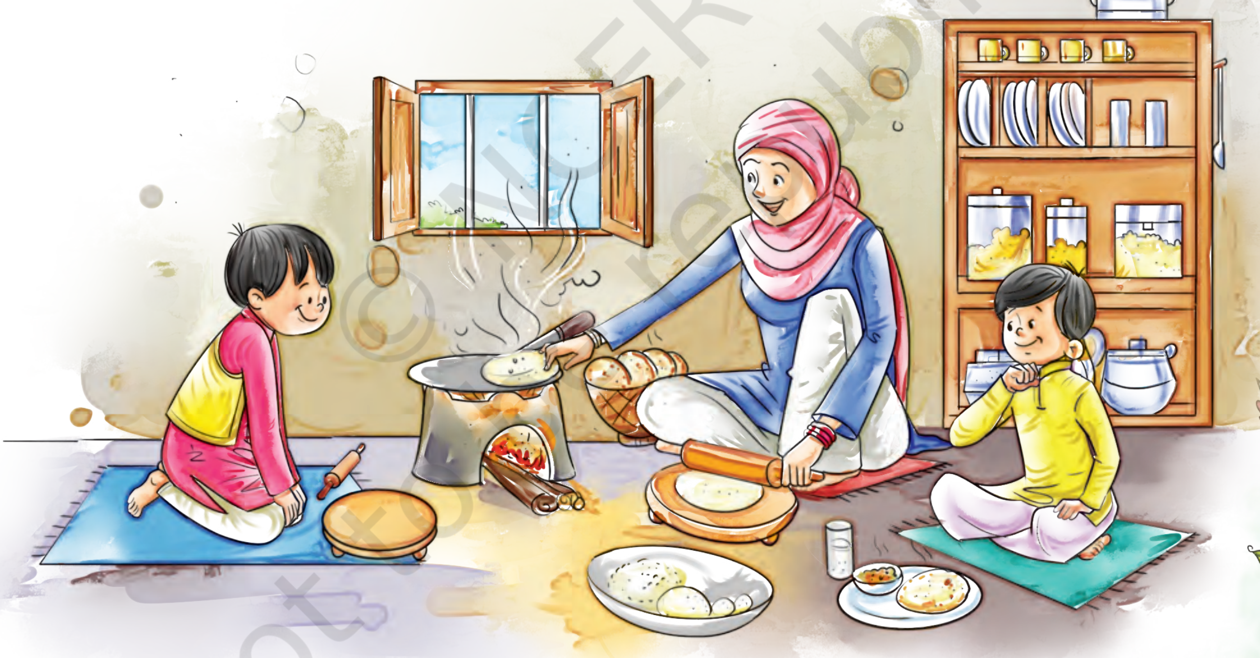

जमाल ने कटोरी रोटी पर रखकर घुमा दी। रोटी गोल हो गई। माँ ने जमाल की रोटी सेंक दी। जमाल की रोटी खूब फूली। जमाल और जय खुशी से रोटी खाने लगे।

साभार – बरखा क्रमिक पुस्तकमाला, एन.सी.ई.आर.टी.

© NCERT not to be republished

बातचीत के लिए

1. जमाल ने माँ से लोई माँगने के बाद क्या-क्या किया?
2. आप रोटी को गोल बनाने के लिए क्या करेंगे?
3. 'फूली रोटी' की जगह पर यदि यह कहानी आपको 'फूली पूरी' के लिए बतानी हो, तो आप कैसे बताएँगे? छोटे समूह में चर्चा कीजिए और अपनी कक्षा में सुनाइए।

आनंदमयी कविता

शिक्षक की सहायता से कविता गाने और पढ़ने का आनंद लीजिए –

रोटी अगर गोल न बने

रोटी अगर गोल न बने,
बन जाए कहीं का नक्शा,
नक्शे को फिर कैसे तपाऊँ,
नक्शे को फिर कैसे पकाऊँ!
तो फिर इसका क्या करूँ,
गोल बना लूँ पृथ्वी जैसी,
या उस देश को डाक से भेजूँ,
बन गया है जहाँ का नक्शा?

– मनोज कुमार झा

© NCERT not to be republished

पढ़िए और मिलाइए

प्रश्नों और उनके उत्तरों को रेखा खींचकर जोड़िए –

रोटी कैसी बनी? •	• माँ ने
जय ने जमाल को क्या दिया? •	• गोल
माँ ने जमाल को क्या दिया? •	• कटोरी
रोटी किसने सेंकी? •	• लोई

पहेली

बंद रहेगा

1. घर के बाहर जब जाते हैं,
लटकाते दरवाज़े पर,
अगर नहीं खोलें हम इसको,
बंद रहेगा पूरा घर।

– श्रीप्रसाद

हम पढ़ते हैं

2. मेरे बस्ते के भीतर है,
और मेज़ पर धरी हुई,
हम पढ़ते हैं, तुम पढ़ते हो,
तस्वीरों से भरी हुई।

– श्रीप्रसाद

© NCERT not to be republished

शब्दों का खेल

1. नीचे दिए गए शब्दों जैसे और शब्द बताइए। उन्हें लिखने का प्रयत्न कीजिए और पढ़कर सुनाइए –

रोटी – ....

फूली – ....

आपने जो नए शब्द बनाए हैं, उन पर एक-एक वाक्य बनाइए –

....

....

2. एक-सी ध्वनियों से आरंभ होने वाले शब्दों को पहचानकर घेरा लगाइए –

जय	जमाल	बुलबुल	जीत
शरबत	शीला	वीर	शेर
डमरू	थैला	डफली	डोर
याद	यमुना	मछली	यशोदा

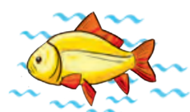

3. अलग ध्वनि से अंत होने वाले शब्दों को पहचानकर लिखिए –

रोटी छोटी चोटी गोल ....

जय लय भय साँप ....

4. इस कहानी में जय और जमाल हैं। ऐसे और नाम बताइए जिसमें 'ज' अक्षर हो –

....

शिक्षण-संकेत – उँगली रखकर शब्दों को पढ़ें। अलग ध्वनि की पहचान करने में बच्चों की सहायता करें। पूर्व अभ्यासों की तरह बच्चों को 'ज', 'ड', 'श', 'य' अक्षरों की ध्वनियों एवं आकृतियों से परिचित कराएँ। बच्चों से 'ज' की ध्वनि वाले शब्द और नाम बताने के लिए कहें। उन्हें बताएँ कि यह आवश्यक नहीं है कि नाम या शब्द 'ज' से ही आरंभ हो।

© NCERT not to be republished

झटपट कहिए

- कच्चा पापड़, पक्का पापड़।
- भालू को आलू भाया, भाया भालू को आलू।

देखिए और लिखिए

1. 'झ', 'ख', 'ड़', 'ऊ' की पहचान कीजिए और अक्षर लिखिए –

....

....

....

....

....

शिक्षण-संकेत – चित्रों के नाम पूछें और उनमें आए 'झ', 'ख', 'ड़', 'ऊ', अक्षरों की पहचान करने में सहायता करें।

© NCERT not to be republished

दिए गए अक्षरों को खोजिए और घेरा लगाइए –

प

म	प	न
प	ह	फ

झ

झ	प	झ
स	झ	व

ड़

ड़	ठ	ड
इ	ड़	ढ़

ऊ

उ	झ	ऊ
ऊ	छ	उ

आइए, मिलकर बनाएँ और मिलकर खाएँ –

शिक्षक एक-एक कर नीचे दिए गए निर्देश देंगे। आप इन निर्देशों को ध्यान से सुनिए और बनाइए।

खाने की सामग्री – मुरमुरे, सेव (नमकीन), बारीक कटे हुए प्याज और टमाटर, मूँगफली, नमक आदि।

निर्देश –

1. सबसे पहले अपने हाथों को धो लें।
2. अब एक बड़ी कटोरी लें।
3. कटोरी में मुरमुरे, सेव (नमकीन), बारीक कटे हुए प्याज और टमाटर, मूँगफली आदि मिला लें।
4. उसमें स्वाद के अनुसार नमक मिला लें।
5. स्वाद भरी चाट तैयार है।

आइए, अब इस चाट को चखा जाए!

© NCERT not to be republished

चित्र और बातचीत

रसोई

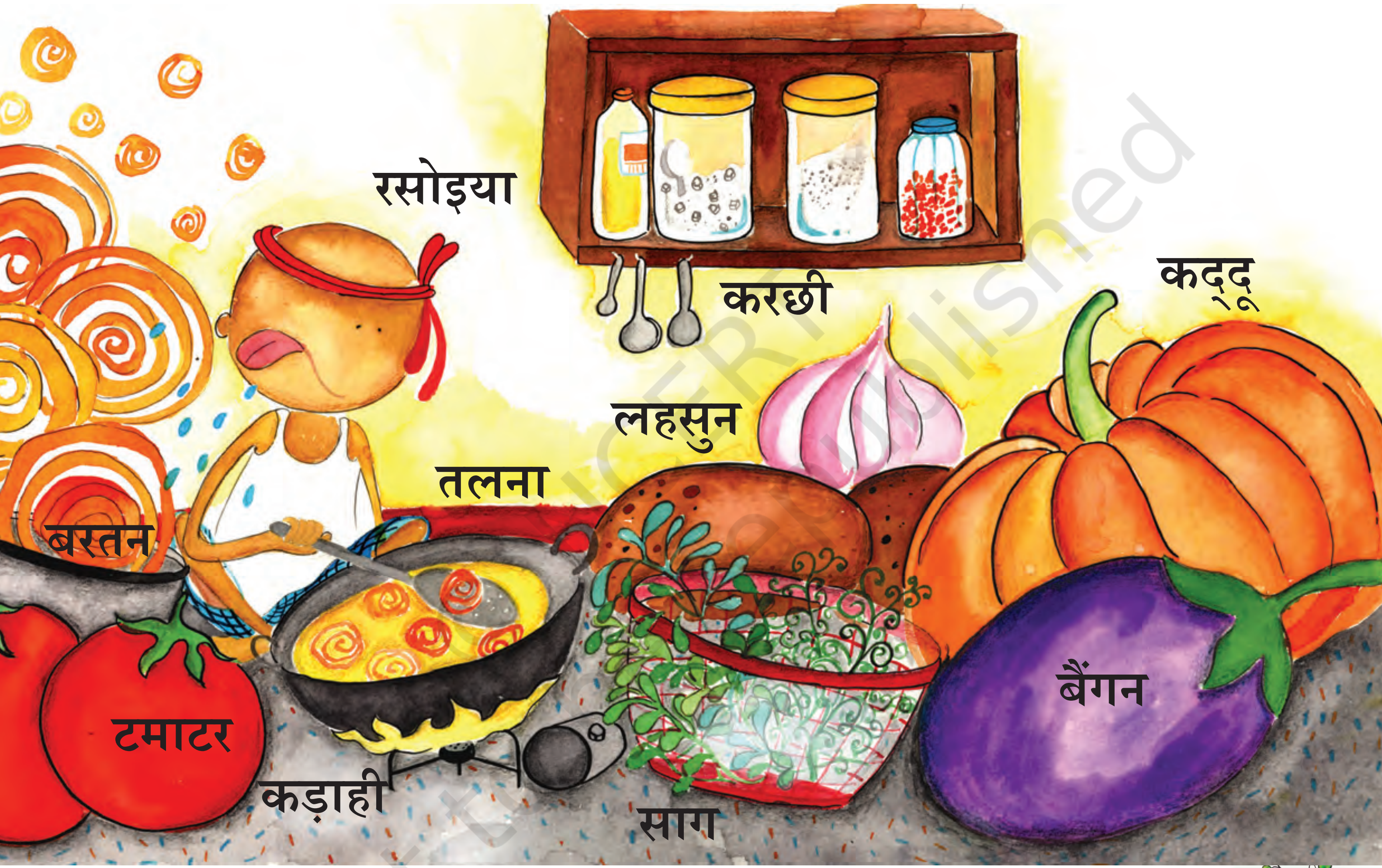

शिक्षण-संकेत – बच्चों के साथ रसोई के चित्र के बारे में बातचीत करें। उनसे उनकी रसोई के बारे में भी पूछें। उन्हें रसोई में सबसे अच्छा क्या लगता है? अनुभव साझा करें और करवाएँ।

not to be republished

इकाई 4: त्योहार और मेले

चित्र और बातचीत

मेला

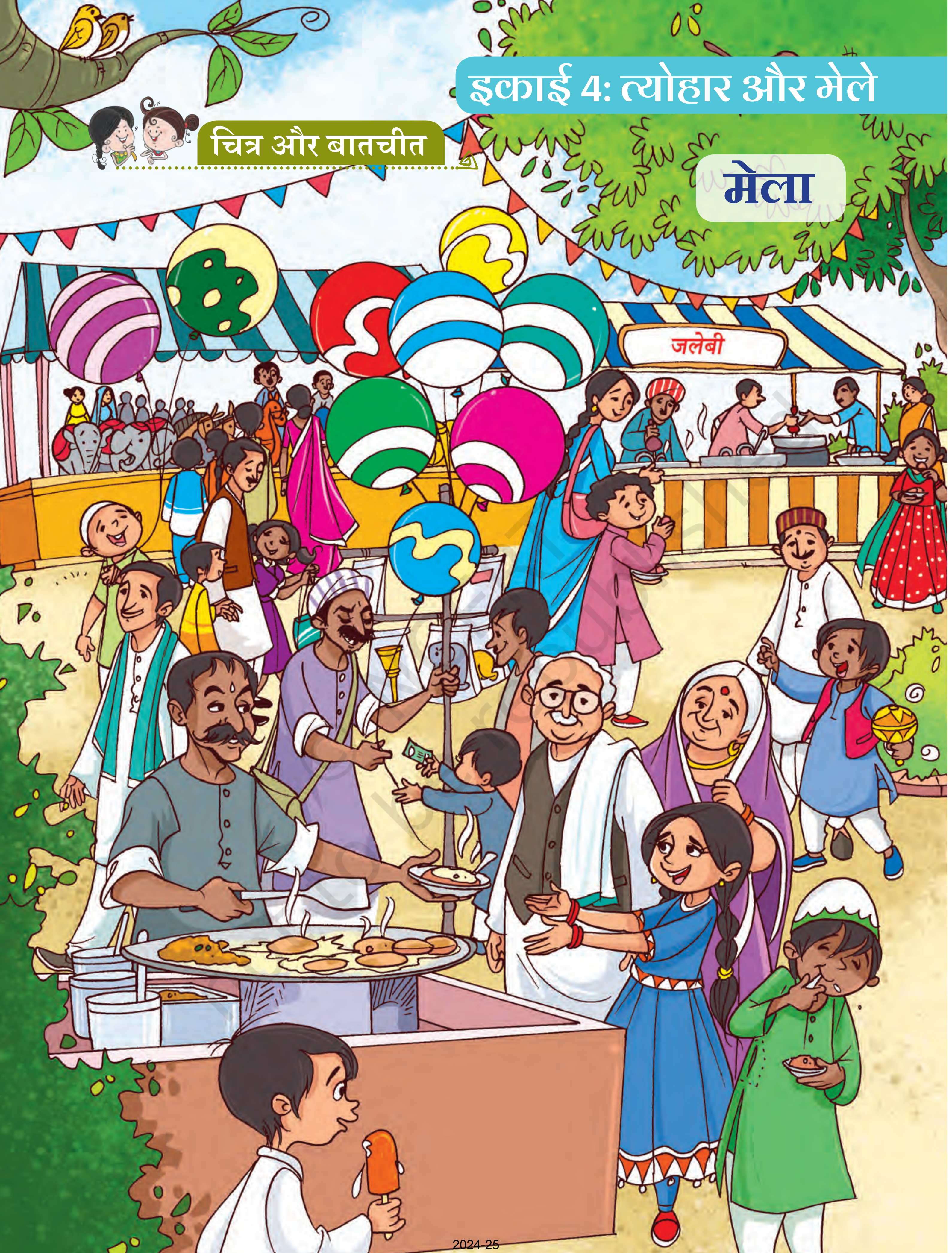

शिक्षण-संकेत – 1. मेले में क्या-क्या दिखाई दे रहा है? 2. कौन-कौन से झूले हैं? 3. मेले में बच्चों को सबसे अधिक क्या पसंद आया होगा? 4. आप अपने यहाँ लगने वाले मेले के विषय में बताइए।

13

आनंदमयी कविता

मेला

घर के पास लगा था मेला,
उसमें आया चाट का ठेला।
हमने जाकर खाई चाट,
ऐसे थे मेले के ठाट।

घर के पास लगा था मेला,
उसमे आया झूलेवाला।
हमने जाकर झूले झूले,
मन में नहीं समाये फूले।

घर के पास लगा था मेला,
उसमें एक खिलौनेवाला।
लाए जाकर चार खिलौने,
रंग-बिरंगे बड़े सलोने।

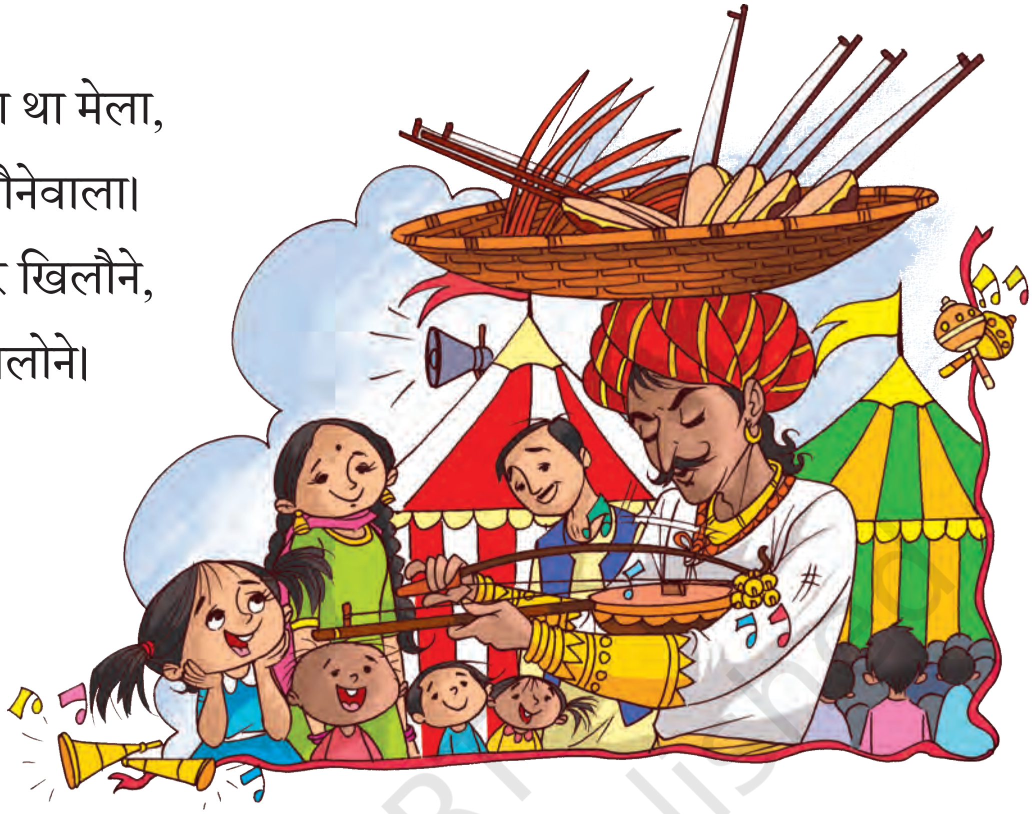

घर के पास लगा था मेला,
हमने देखा मन-भर मेला।

गुड़िया, गुनगुन दोनों साथ,
छोटू ने पकड़ा था हाथ,

मेले के थे ऐसे ठाट,
झूले, ठेले, सुंदर हाट।

– रमेश थानवी

शिक्षण-संकेत – मेले या हाट से जुड़े बच्चों के अनुभवों को कक्षा में बताने के लिए उन्हें आमंत्रित करें और धैर्य से सुनें।

© NCERT not to be republished

बातचीत के लिए

1. आप भी इस मेले में होते, तो क्या-क्या करते?
2. मेले में छोटू ने किसका हाथ पकड़ा होगा और क्यों?
3. चाट के अतिरिक्त ठेले पर रखकर क्या-क्या बेचा जाता है?
4. आप अपने यहाँ लगने वाले मेले के विषय में बताइए।
5. कविता में देखकर इन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। छोटे समूह में अपने मित्रों के साथ मिलकर लिखिए –

   (i) मेला कहाँ लगा था?

   ....

   (ii) बच्चों ने मेले में क्या खाया?

   ....

   (iii) बच्चों ने मेले में क्या खरीदा?

   ....

शब्दों का खेल

1. 'मेला-ठेला' जैसे और शब्दों की जोड़ी बताइए और लिखिए –

....

2. कविता में इन शब्दों को खोजकर घेरा लगाइए –

ठेला ठाट

© NCERT not to be republished

3. नीचे दिए गए चित्रों के नाम बताइए और अनुमान लगाकर पढ़ने का प्रयास कीजिए –

एक

ठेला

जलेबी

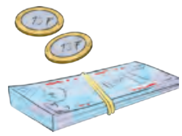

पैसे

ऐनक

थैला

सेब

बैंगन

4. शब्द बनाइए, लिखिए और पढ़कर सुनाइए –

शे	रे	ला
ब	मे	रा
से	थै	र
पै	ते	घे

....

....

....

....

....

शिक्षण-संकेत – चित्रों की सहायता से बच्चों को 'ए' और 'ऐ' अक्षर की ध्वनि, आकृति और मात्रा (े एवं ै) से परिचित कराएँ। शब्द पढ़ने में बच्चों की सहायता करें।

© NCERT not to be republished

चित्रकारी

मान लीजिए कि आप भी इस मेले में गए हैं। आप वहाँ क्या-क्या करेंगे? अपने मित्रों के साथ बातचीत कीजिए।

चित्र बनाइए और कुछ शब्द भी लिखिए –

© NCERT not to be republished

चलिए, कुछ बनाते हैं

त्योहारों में तोरण से घर की सजावट करते हैं। आपने भी अलग-अलग वस्तुओं से बने तोरण देखे होंगे। तोरण पत्ते, फूल, कागज़ की आकृतियों, ऊन, छोटे मोती आदि से बनाए जाते हैं। आप भी कक्षा में अपने मित्रों के साथ मिलकर तोरण बनाइए। आपके आस-पास की जो वस्तुएँ आपको सुविधा से मिल जाएँ, उन्हीं से आप तोरण बना सकते हैं।

अपने घर पर ये तोरण सभी को दिखाएँ। सभी को बताएँ कि आपने ये कैसे बनाए।

14

मिलकर पढ़िए

बरखा और मेघा

एक बार की बात है, दो सहेलियाँ थीं— एक मुर्गी और एक बत्तख। मुर्गी का नाम था— मेघा। बत्तख का नाम था— बरखा। उनके तीन-तीन बच्चे थे। वे सब मेला देखने दूसरे गाँव जा रहे थे।

रास्ते में नदी आ गई। मेघा ने कहा, “हम नदी कैसे पार करेंगे? हम तो डूब जाएँगे।” बरखा ने कहा, “हम सब तैरकर नदी पार कर लेंगे।” मेघा ने पूछा, “वो कैसे?”

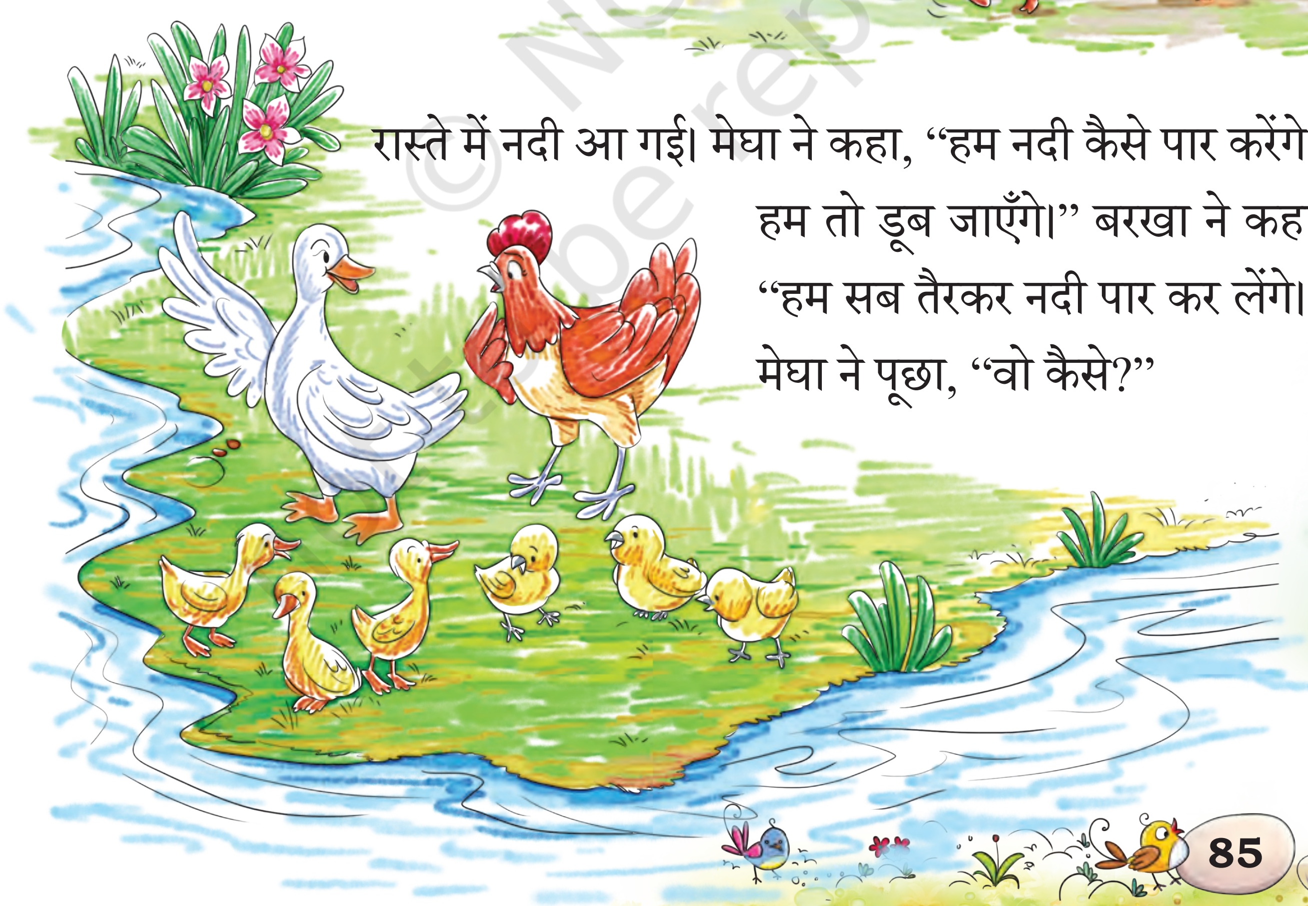

© NCERT not to be republished

बरखा ने सबको पास बुलाया और अपनी जुगत बताई।

सब खुशी से उछल पड़े — हुर्रे!

वे सब नदी पार कर गए।

– *आस्तिक सिन्हा (साभार – फिरकी बच्चों की, एन.सी.ई.आर.टी.)*

बातचीत के लिए

1. मेघा और बरखा ने बच्चों के साथ नदी कैसे पार की?
2. मेघा और बरखा के बच्चों ने मेले में क्या-क्या किया होगा?
3. मेले से घर लौटते समय मेघा और बरखा के बच्चे आपस में क्या बातें कर रहे होंगे?
4. मेला आपके घर से कितनी दूर लगता है? आप वहाँ कैसे पहुँचते हैं?
5. नीचे दिए चित्र को देखिए और गिनकर बताइए कि मुर्गी और बत्तख के कितने-कितने बच्चे हैं –

© NCERT not to be republished

15

आनंदमयी कविता

होली

रंग रंगीली होली आई,
सबके मन को होली भायी।
खेलें-कूदें खुशी मनाएँ,
ढोल बजाकर होली गाएँ।

निकल पड़ी मित्रों की टोली,
सबने मिलकर खेली होली।
आओ, लाल गुलाल लगाएँ,
पिचकारी से रंग उड़ाएँ।

पुए और पकवान बनाएँ,
जो घर आए, उसे खिलाएँ।
सबको अपने गले लगाएँ,
होली का संदेश सुनाएँ।

– मधुर अथैया

बातचीत के लिए

1. आप होली पर क्या-क्या करते हैं?
2. आप कौन-कौन से त्योहार मनाते हैं?
3. वे त्योहार आप कैसे मनाते हैं?
4. छोटे समूह में अपने मित्रों के साथ मिलकर इन प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

   (i) कविता में किस त्योहार की बात की गई है?

   ....

   (ii) कविता में खाने की कौन-सी वस्तुओं के नाम हैं?

   ....

(iii) कविता में से शब्द खोजकर लिखिए –

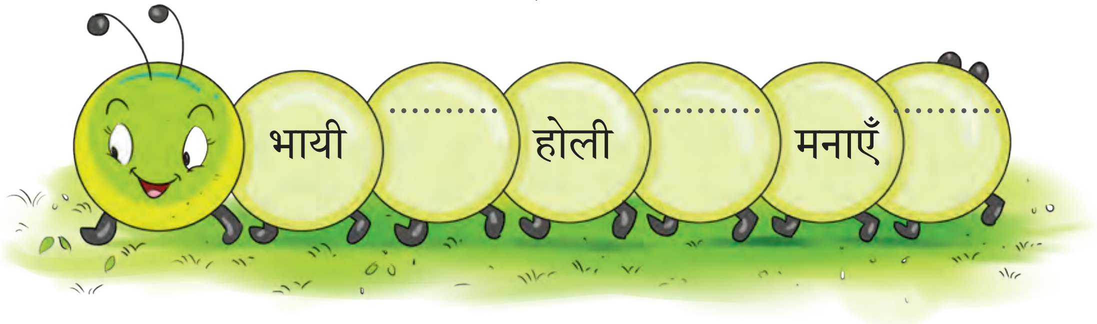

शब्दों का खेल

1. दिए गए शब्दों को पढ़िए। पहली ध्वनि पहचानिए। अलग ध्वनि से शुरू होने वाले शब्द पर गोला बनाइए –

तीखा	मीठा	तेज़	तोता
भेल	भूख	भैंस	घी
घोंघा	घंटा	घंटी	भोला
छाता	छह	बाघ	छूना

2. नीचे दिए गए शब्दों को लिखिए –

एक	एड़ी	एकता	केला
....	....	....	....
ऐसा	ऐसे	ऐनक	थैला
....	....	....	....

© NCERT not to be republished

3. नीचे दिए चित्रों के नाम बताइए –

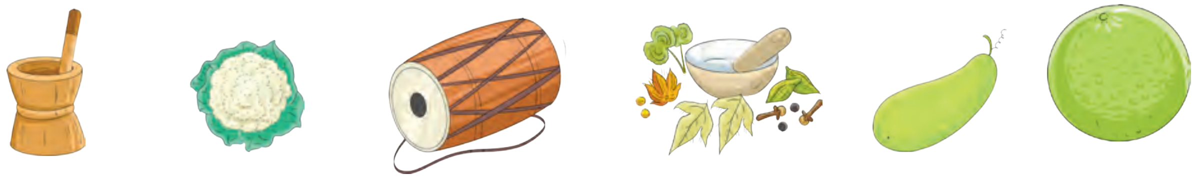

4. नीचे दिए शब्दों में 'ओ' (ो) या 'औ' (ौ) की मात्रा लगाकर शब्द लिखिए –

....

....

....

....

....

....

झटपट कहिए

माला ने मेले में माला से माला खरीदी और मेले के मटर, मक्का और मावा मालपुए माला ने खाए।

खोजें-जानें

परिवार के लोगों से बातचीत करके जानें कि आपके घर पर कौन-से त्योहार सबसे अधिक मनाए जाते हैं और क्यों?

शिक्षण-संकेत – बच्चों को झटपट बोलकर आनंद लेने वाले वाक्य स्वयं बनाने के लिए प्रोत्साहित करें, जैसे– कटा टमाटर टीटू ने खाया, खाया टीटू ने कटा टमाटर!

© NCERT not to be republished

16

आनंदमयी कविता

जन्मदिवस पर पेड़ लगाओ

जन्मदिवस पर पेड़ लगाओ,
हरा-भरा संसार बसाओ,
जन्मदिवस पर पेड़ लगाओ।

हरियाली से है खुशहाली,
सुंदरता मन हरने वाली।
पेड़ों और प्रकृति का नाता,
जैसे हो बच्चों की माता।

फूल और फल तुम पाओ,
जन्मदिवस पर पेड़ लगाओ।

– राजा चौरसिया

© NCERT not to be republished

बातचीत के लिए

1. आप अपना जन्मदिन कब मनाते हैं?
2. आप अपने जन्मदिन पर क्या-क्या करते हैं?
3. कविता में जन्मदिन पर क्या करने के लिए कहा गया है?
4. क्या होता अगर –
   (i) सभी अपने जन्मदिवस पर पेड़ लगाते?
   (ii) सभी जन्मदिवस पर स्वच्छता के कार्य करते?

खोजें-जानें

पता कीजिए और लिखिए कि इनका जन्मदिन कब आता है –

1. दादा – .... 2. दादी – ....
3. नाना – .... 4. नानी – ....
5. आपके दोस्त – ....

....

शब्दों का खेल

1. समान लय वाले शब्द खोजकर लिखिए –

(i) फल – .... (ii) माता – ....

(iii) फूल – .... (iv) हरियाली – ....

© NCERT not to be republished

2. सही शब्द से वाक्य पूरे कीजिए –

(i) माली ने धरती में .... बोया। (बीज/चीज़)

(ii) बड़े प्यार से उसमें .... डाला। (जल/फल)

(iii) छोटा-सा, नन्हा-सा .... उग आया। (पौधा/सौदा)

3. पेड़ों के नाम खोजकर लिखिए –

नी	म	ली	आ	पी
बे	अ	शो	क	प
आ	ल	आ	ली	ल
ली	र	बे	र	प
इ	म	ली	आ	म

....

....

....

....

....

....

4. अपने घर के आस-पास के चार पेड़ों के नाम लिखिए –

....

....

चित्रकारी

अपनी पसंद के किसी फूल का चित्र बनाकर रंग भरिए –

© NCERT not to be republished

आनंदमयी कविता

हवा

ऊपर-नीचे दाएँ-बाएँ,
हवा चली साँय-साँय।
मुन्नी को छेड़कर,
चढ़ गई पेड़ पर।
हाथ नहीं आऊँगी,
दूर मैं उड़ जाऊँगी।
मुन्नी बोली हँसकर,
हवा रानी बस कर।
पकड़ तुझे मैं लाऊँगी,
फुग्गे में ले जाऊँगी।

– शिवचरण सरोहा

© NCERT not to be republished

चित्रकारी

मान लीजिए कि मुन्नी ने हवा से भरे फुग्गे आपको दे दिए। आप उन फुग्गों से क्या करेंगे? सोचिए, चित्र बनाइए और कुछ शब्द भी लिखिए –

कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं, आप उनमें से भी शब्द चुन सकते हैं।

हवा   फुग्गा   गुब्बारा   खेल   मुन्नी

© NCERT not to be republished

चित्र में देखकर बताइए कि मुन्नी के बाईं ओर, दाईं ओर, उसके आगे और उसके पीछे क्या-क्या दिख रहा है –

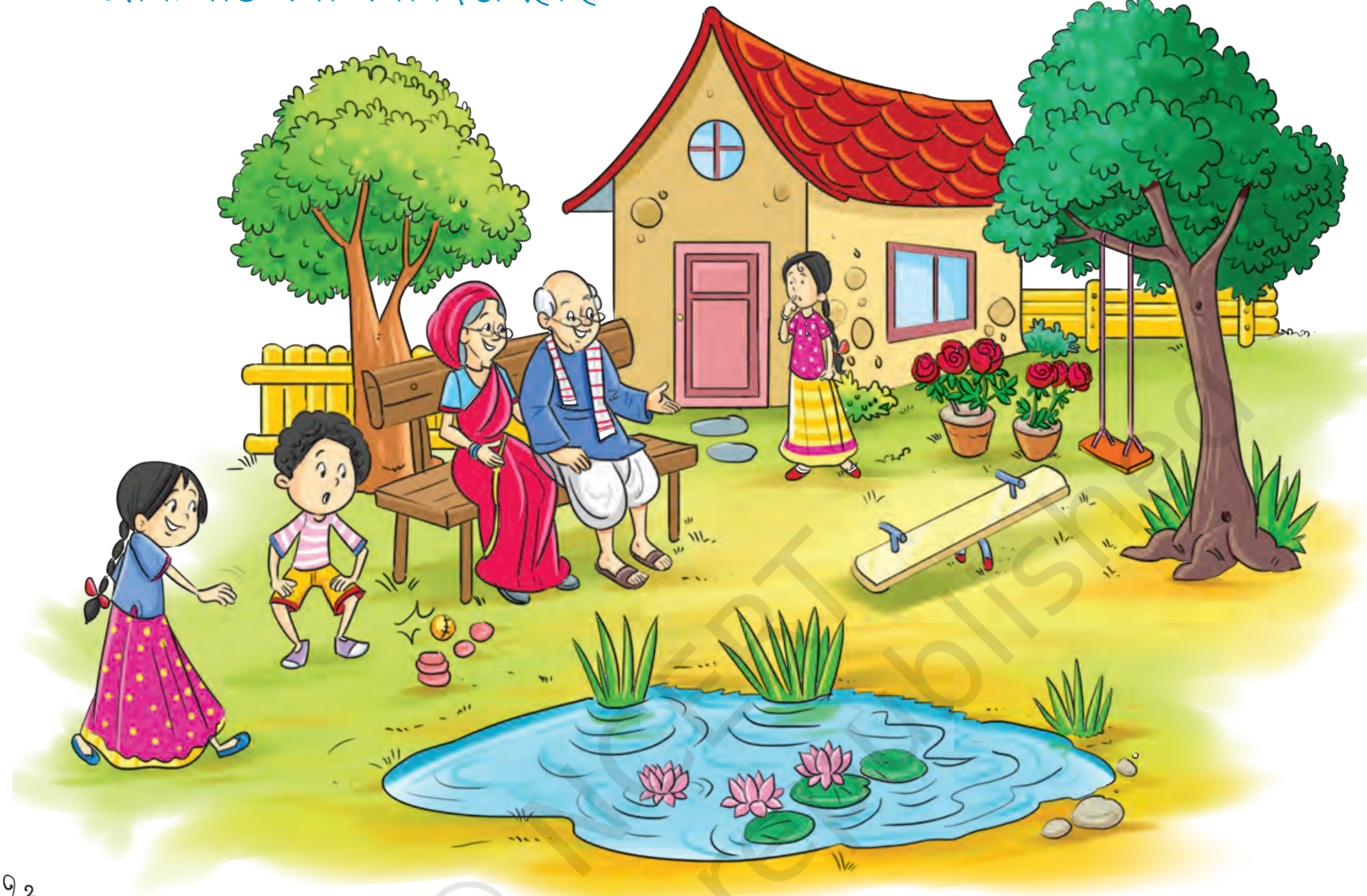

मुन्नी के दाईं ओर – ...., ...

मुन्नी के बाईं ओर – ...., ...

मुन्नी के आगे – ...., ...

मुन्नी के पीछे – ...., ...

भूल-भुलैया

घोड़े को जंगल तक पहुँचाइए। यह घोड़ा केवल 'ओ' के रास्ते पर ही चलता है और अन्य अक्षरों पर रुक जाता है।

ओ	औ	ओ	क	औ	ज
औ	ओ	औ	ट	औ	प
ओ	स	म	औ	र	ल
छ	ओ	औ	ठ	न	अ
ब	औ	ओ	ओ	क	झ
थ	ग	व	च	ओ	ओ

© NCERT not to be republished

18

मिलकर पढ़िए

कितनी प्यारी है ये दुनिया

मुझे हवा प्यारी लगती है ...
और सूरज और बारिश भी।

मुझे धरती प्यारी लगती है ...
और समुद्र और आसमान भी।

मुझे चिड़ियाँ प्यारी लगती हैं ...
और जानवर और मछलियाँ भी।

© NCERT not to be republished

मुझे फूल प्यारे लगते हैं ...
और फल भी।

मुझे अपनी किताबें अच्छी लगती हैं ...
और अपने कपड़े, अपने खिलौने भी।

मुझे माँ और बापू प्यारे लगते हैं...
और अपने भाई और बहन भी।

मुझे सारी दुनिया प्यारी लगती है।

– जयंती मनोकरन

© NCERT not to be republished

बातचीत के लिए

1. आपको इनमें से क्या-क्या अच्छा लगता है और क्यों –

हवा   बारिश   फल   फूल   खिलौने   धरती

2. इसके अतिरिक्त आपको क्या अच्छा लगता है?

नीचे दिए गए वाक्य को पूरा कीजिए –

मुझे अच्छे लगते हैं ....

अपने मित्रों से भी पूछिए कि उन्हें क्या अच्छा लगता है?

3. कहानी में आए 'प्यारी' शब्द पर गोला लगाइए और लिखिए –

....

शब्दों का खेल

अपने शिक्षक की सहायता से नीचे दिए गए शब्दों को पढ़िए। पहली ध्वनि पहचानिए –

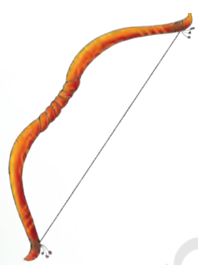
धनुष

फूल

खेल

फल

खिलौना

'ख', 'फ' और 'ध' की ध्वनियों वाले अन्य शब्द बताइए। ये ध्वनियाँ शब्द में कहीं भी हो सकती हैं।

© NCERT not to be republished

हरी-भरी दुनिया

शिक्षण-संकेत – बच्चों को चित्र देखने के लिए पर्याप्त समय दें और चित्र से संबंधित बातचीत करें। बातचीत के कुछ बिंदु इस प्रकार हो सकते हैं – 1. चित्र में सबसे हास्यजनक/मनोरंजक बात आपको क्या लगी और क्यों? 2. खरगोश चूजों को क्यों नहीं खोज पा रहा है? 3. बगुले और भैंस में मित्रता कैसे हुई होगी? बच्चों को इस चित्र के आधार पर कुछ प्रश्न स्वयं बनाने और अपने मित्रों से पूछने के लिए प्रोत्साहित करें।

शब्दों का खेल

1. चित्र पहचानकर नाम लिखिए –

....

....

....

....

2. चित्र देखकर नाम बताइए और पढ़ने का प्रयास कीजिए –

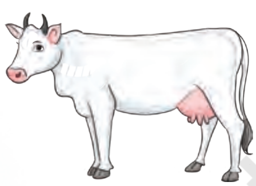

गाय

वन

वर्षा

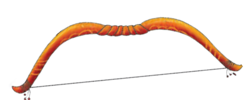

धनुष

शिक्षण-संकेत – चित्रों की सहायता से बच्चों को 'य', 'व' और 'ष' अक्षर की ध्वनियों और आकृतियों से परिचित कराएँ। बच्चों से इन ध्वनियों से बनने वाले शब्द भी पूछें।

© NCERT not to be republished

19

आनंदमयी कविता

चाँद का बच्चा

वह देखो वह निकला चाँद,
अम्मा तुमने देखा चाँद!
यह भी क्या बच्चा है अम्मा,
छोटा-सा मुन्ना-सा चाँद।

इतना दुबला, इतना पतला,
कब होता है ऐसा चाँद!
अम्मा उस दिन जो निकला था,
वह था गोल बड़ा-सा चाँद।
बादल से हँस-हँसकर उस दिन,
कैसा खेल रहा था चाँद!

छुप जाता था, निकल आता था
करता था यह तमाशा चाँद।
अपने बच्चे को भेजा है,
घर में बैठा होगा चाँद।
यह भी एक दिन बन जाएगा,
अच्छा गोल बड़ा-सा चाँद।

अच्छा अम्मा कल क्यों तुमने,
मुझको कहा था मेरा चाँद।

– अफ़सर मेरठी

© NCERT not to be republished

बातचीत के लिए

1. यह कविता किसके विषय में है?
2. कविता का नाम 'चाँद का बच्चा' क्यों रखा गया होगा?
3. आप इस कविता को क्या नाम देना चाहेंगे और क्यों?
4. क्या चाँद हमेशा गोल ही दिखता है?
5. आपकी माँ आपको क्या कहकर पुकारती हैं?

शब्दों का खेल

नीचे दी गई वस्तुएँ कैसी हैं— गोल, चौकोर, तिकोनी? रेखा खींचकर मिलाइए –

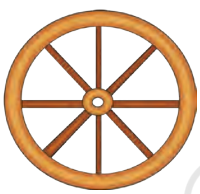

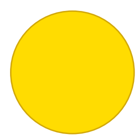

तुक मिलने वाले शब्दों को खोजकर लिखिए –

गोल – ....

चाँद – ....

बड़ा – ....

छोटा – ....

© NCERT not to be republished

चित्र और बातचीत

कौए की कहानी

1

2

3

4

NCERT not to be republished

शिक्षण-संकेत – बच्चों को चित्रों के आधार पर अपने मन से कहानी बनाने और अपनी भाषा में सुनाने के लिए कहें। बच्चों को कहानी को आगे बढ़ाने के लिए भी प्रोत्साहित करें।

आओ कुछ बनाएँ

अपने आस-पास नीचे गिरे हुए फूल, पत्ते, डंडियाँ एकत्र कीजिए। छोटे समूह में बैठकर इनसे कुछ आकृतियाँ बनाइए। आप तितली, पेड़ आदि भी बना सकते हैं। आकृतियाँ बनाने के बाद कक्षा में सभी को बताइए कि आपने ये कैसे बनाईं।

चित्रकारी और लेखन

दिए गए चित्र में आप क्या-क्या देख पा रहे हैं? कुछ नाम लिखिए –

....

....

अब इन शब्दों से वाक्य बनाइए –

1. यह एक पेड़ है।
2. ....
3. ....
4. ....

© NCERT not to be republished

खोजें-जानें

आपके घर के आस-पास जो पेड़-पौधे हैं, उनके नाम जानिए। कुछ पेड़-पौधों के चित्र बनाइए। अपने चित्र के साथ कुछ शब्द भी लिखने का प्रयत्न कीजिए। कक्षा में सभी को बताइए।

खेल-खेल में

इस कविता को मिलकर गाइए।

दो समूह बनाइए। एक समूह प्रश्न पूछेगा और दूसरा समूह उत्तर देगा।

कौन परिंदा

कौन परिंदा बोले चूँ-चूँ
कौन परिंदा गुटरू-गूँ
कौन परिंदा पीहू-पीहू
कौन परिंदा कुकड़ू-कूँ।
कौन परिंदा बोले काँव-काँव
कौन परिंदा बोले कुहू-कुहू
कौन परिंदा बोले टें-टें
नकल उतारे हू-ब-हू!

– श्याम सुशील

© NCERT not to be republished

शब्दों का खेल

कविता में आए 'कौन' शब्द पर घेरा लगाइए। पेड़ पर लगे अक्षरों से शब्द बनाइए –

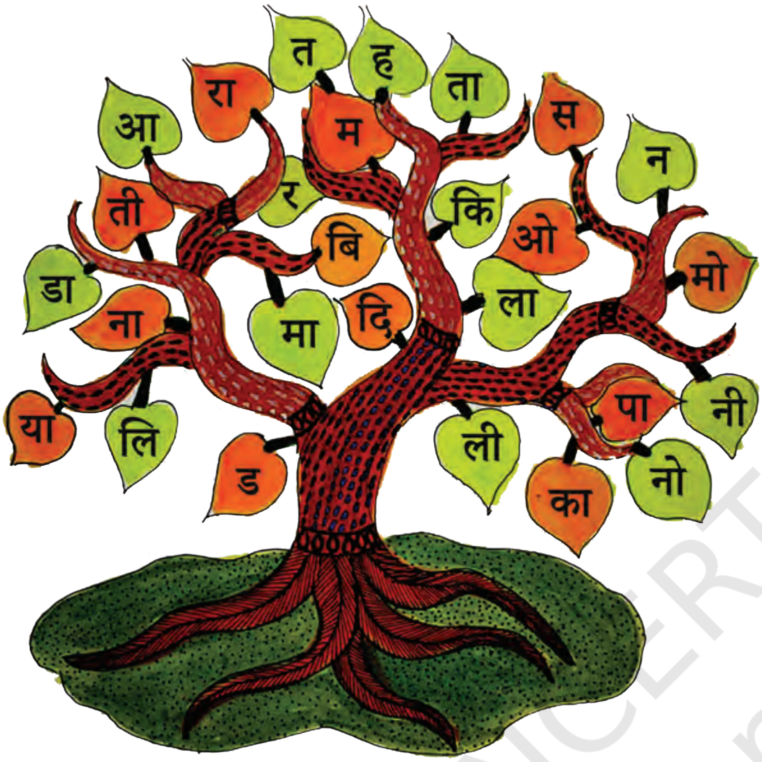

....

....

....

....

....

....

पढ़िए और लिखिए

कविता को आगे बढ़ाइए –

हमने तीन चीज़ें देखीं

हमने तीन चीज़ें देखीं, बाबा तीन चीज़ें देखीं
हमने बाग में देखी मकड़ी
वह तो खा रही थी ....ककड़ी..........
उसके पास पड़ी थी ....लकड़ी..........

© NCERT not to be republished

हमने तीन चीज़ें देखीं, बाबा तीन चीज़ें देखीं
हमने बाग में देखा भालू
वह तो खा रहा था ....
नाम था उसका ....

हमने तीन चीज़ें देखीं, बाबा तीन चीज़ें देखीं
हमने बाग में देखा बंदर
वह तो खा रहा था ....
नाम था उसका ....

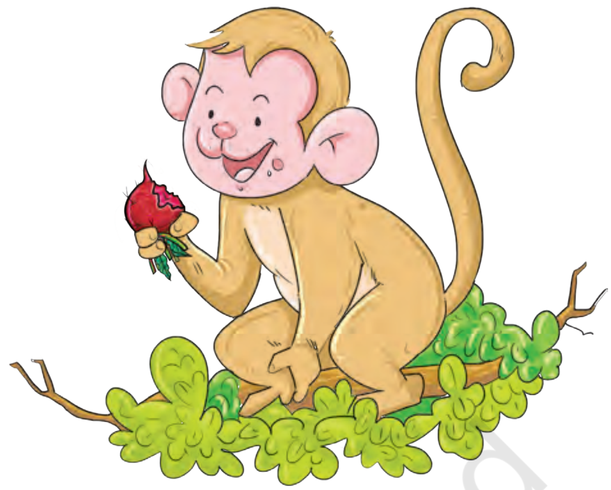

शब्दों में आए अक्षरों के अनुसार उन्हें 'ठ', 'ध', 'ढ', 'ष' के घर में छाँटकर लिखिए –

ठाठ धोती ढक्कन धनुष साठ ढोलक धान
बैठ ढीला उषा ठेला षट्कोण धागा

© NCERT not to be republished

अक्षर गीत

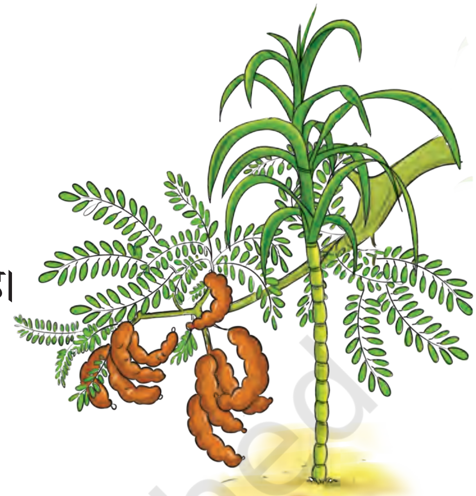

अनार दाड़िम भी कहलाता।
आम चूसकर बच्चा खाता॥

इमली तो खट्टी होती है।
ईख सदा मीठी होती है॥

उल्लू रात में जगते रहते।
ऊदबिलाव जल-थल में रहते॥

ऋषि-मुनि आकर हवन कराते।
ॠ तो संस्कृत में ही पाते॥

(ऌ भी संस्कृत में ही होता।
ॡ का तो कुछ पता न चलता॥)

एड़ी में काँटा चुभ जाता।
ऐनक कानों पर चढ़ जाता॥

ओखल में कूटते हैं अनाज।
औषधि करती रोग इलाज॥

स्वर सब यहीं समाप्त होते हैं।
अब हम व्यञ्जन पर चलते हैं॥

© NCERT not to be republished

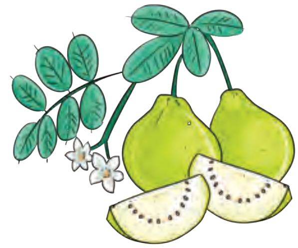

अंशक अमरूदों के लाओ।
अः अः सब मिल उनको खाओ॥

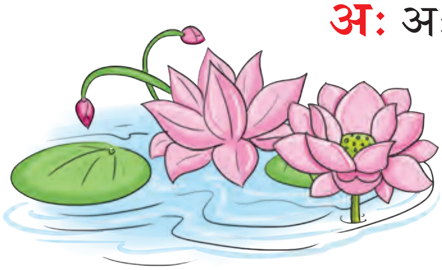

कमल ताल में सबको भाते।
खरल में मसाले पिस जाते॥

गमलों में पानी दे आना।
घड़ियालों के पास न जाना॥

कङ्घे से माँ बाल बनातीं।
क से ङ ध्वनि कण्ठ से आतीं॥

चम्मच से हम खाना खाते।
छतरी बारिश में ले जाते॥

"जन-गण-मन" सब बच्चे गाते।
झण्डा खम्भे पर फहराते॥

पञ्चम स्वर में कोयल गातीं।
च से ञ ध्वनि तालु से आतीं॥

टट्टू रस्ते में अड़ जाता।
ठठेरा उत्तम पात्र बनाता॥

© NCERT not to be republished

डलिया में तुम फूल सजाओ।
ढक्कन शीशी पर लगवाओ॥

प**ण्**डता हमको पाठ पढ़ातीं।
ट से **ण** ध्वनि मूर्धा से आतीं॥

तबला लड़का बजा रहा है।
थर्मस से चाय पिला रहा है॥

दरी बैठ हम गाना गाते।
धनुष उठा हम तीर चलाते॥

नल से नानी पानी लातीं।
त से **न** ध्वनि दाँत से आतीं॥

पतङ्ग से बच्चे पेच लड़ाते।
फल पेड़ों से तोड़ कर खाते॥

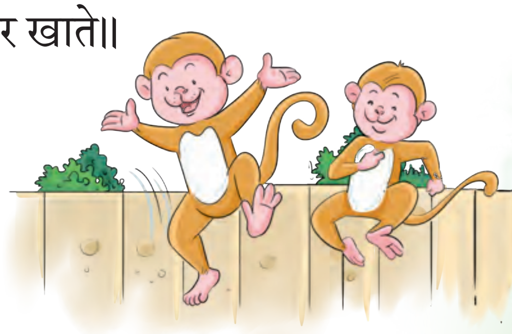

बन्दर कूद-फाँदकर आए।
भगोने लोटे सब लुढ़काए॥

मटर-कचौरी बुआ बनातीं।
प से **म** ध्वनि ओष्ठ से आतीं॥

यज्ञ में घी की आहुति देते।
रबड़ी हलवाई से लेते।।

लवण नमक को भी हैं कहते।
वनमानुष जङ्गल में रहते।।

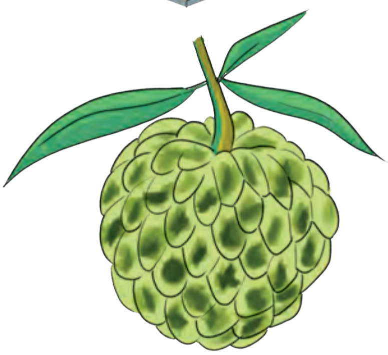

दो-स्वर-मेल से **य र ल व** आते।
अत: अर्धस्वर ये कहलाते।।

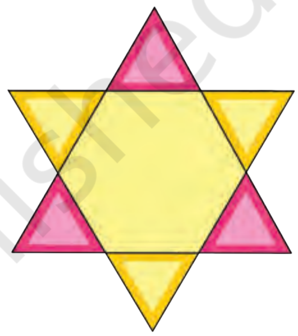

शरीफ़ा पकने पर ही खाओ।
षट्कोण चित्र स्वयं बनाओ।।

सप्तर्षि आकाश चमकाते।
हल किसान खेतों में चलाते।।

श ष स ह ऊष्म कहाते।
अक्षर यहीं समाप्त हो जाते।।

यही वर्णमाला हम गाते।
मिल-जुल अपना ज्ञान बढ़ाते!

आपको अब सब अक्षर आते?

– मंजुल भार्गव

शिक्षण-संकेत – यह कविता केवल आनंद के लिए है। बच्चों को आनंद के साथ इसके अलग-अलग खंडों को वर्ष-भर गाने के लिए प्रोत्साहित करें।

© NCERT not to be republished